RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2020-22

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 59 अंक : 02 प्रकाशन तिथि : 25 जनवरी कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 फरवरी 2022

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

क्षत्रियों का अनुशासित रैला

22 दिसम्बर को जयपुर में क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती समारोह की रैली में लाखों लोग उमड़े। इतनी भीड़ पुलिस-प्रशासन के लिए आमतौर पर चुनौती लेकर आती है लेकिन इस समारोह में अनुशासन ऐसा था जिसकी तारीफ सबने की।

संघशक्ति

4 फरवरी, 2022

वर्ष : 58 अंक : 02

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय – सूची

☞ समाचार संक्षेप	✍	04
☞ हीरक जयन्ती उद्बोधन	✍ माननीय संरक्षक श्री	05
☞ हीरक जयन्ती उद्बोधन	✍ संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह जी	07
☞ हीरक जयन्ती उद्बोधन	✍ श्री महावीरसिंह जी सरवड़ी	11
☞ हीरक जयन्ती उद्बोधन	✍ माननीय वक्तागण	18
☞ पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)	✍ श्री चैनसिंह बैठवास	23
☞ इतिहास के झरोखे में गोगा चौहान	✍ श्री मातुसिंह मानपुरा	26
☞ पृथ्वीराज चौहान (तृतीय)	✍ श्री विरेन्द्रसिंह मांडण	30
☞ यदुवंशी करौली का इतिहास	✍ राव शिवराजपाल सिंह इनायती	32
☞ आओ मैं बोध कराती हूँ	✍ दीया चौहान खरोड़िया	33
☞ अपनी बात	✍	34

समाचार संक्षेप

हीरक जयन्ती :

श्री क्षत्रिय युवक संघ का हीरक जयन्ती समारोह 22 दिसम्बर, 2021 को भवानी निकेतन शिक्षण संस्थान के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। समारोह में समाज के पुरुष व महिलाएँ, युवक व युवतियाँ इतनी अधिक संख्या में सम्मिलित हुए कि समारोह को भव्य रूप प्रदान कर दिया। विशाल क्षेत्र में बैठने की व्यवस्था की गई थी लेकिन पूरा स्थान खचाखच भर जाने के कारण अनुमानतः एक लाख लोगों को तो पुलिस ने बाहर सड़क पर ही रोक दिया अन्दर जगह न मिलने पर भी बाहर बड़ी शान्ति के साथ उद्‌बोधन सुनते रहे और किसी तरह की अव्यवस्था नहीं हुई। लगभग सात हजार से अधिक वाहन जयपुर से बाहर के आए और सभी की व्यवस्थित पार्किंग भवानी निकेतन में ही कर दी गई। संघ के स्वयंसेवक सभा स्थल की सफाई कार्य में कई दिनों तक जुटे रहे जिनकी कर्मशीलता को देखने वाले आश्चर्यचकित थे। सभी स्वयंसेवक व स्वयं सेविकाएँ निर्धारित गणवेश में थी। महिलाएँ अत्यधिक संख्या में उपस्थित हुई जिनमें जयपुर शहर के साथ बाहर से आई महिलाएँ भी बड़ी संख्या में थी। महिलाओं का केसरिया वेश समारोह की सुन्दरता को बढा रहा था तो पुरुषों के केसरिया साफों ने मोहक नजारा प्रस्तुत किया। पता चला कि जयपुर में केसरिया साफों की उपलब्धि समाप्त हो गई। समाज के अधिकारी, कर्मचारी, व्यापारी, राजनीतिज्ञ सभी श्रेणी के लोग सम्मिलित थे।

सभी समाजों के प्रमुख पदाधिकारियों को आमंत्रित किया गया था। विधायकों, सांसदों, अधिकारियों, संतों, संस्था प्रमुखों आदि को आमंत्रित किया गया था। काफी आमंत्रित लोग समारोह में सम्मिलित हुए। अनुसूचित जाति, जनजाति व मुस्लिम समुदाय के लोग भी समारोह में पहुँचे।

गाँवों से बूढे बुजुर्ग पुरुष तथा महिलाएँ भी समारोह में सम्मिलित होने की अपनी इच्छा को रोक नहीं सके और कष्ट पाकर भी पहुँचे। एक माँ तो बिल्कुल कुड़ी हुई अवस्था में लकड़ी का सहारा लेकर चलते हुए भी पहुँची तो एक बुजुर्ग व्हील चेयर में बैठकर भी पहुँचे। इन सभी का सामाजिक भाव स्तुत्य है। केसरिया ध्वज का पहरा एक स्वयंसेवक व एक स्वयंसेविका दे रहे थे जो बदल-बदल कर आ रहे थे। एक मधुर संयोग ऐसा भी रहा जब संघप्रमुखश्री उद्‌बोधन दे रहे थे उस समय ध्वज के पहरे पर उन्हीं का पुत्र व उन्हीं की पुत्री थी।

समारोह में सम्मिलित सभी अत्यन्त प्रफुल्लता का भाव लेकर लौटे। समारोह की व्यवस्था, समारोह में अनुशासन, समारोह में गरिमापूर्ण वातावरण, समारोह की भव्यता ने समारोह को ऐतिहासिक बना दिया। पत्रकार बन्धुओं का तो कमियों को उजागकर करने का कार्य भी रहता है मगर उनके विचार थे कि कुछ ऐसा था ही नहीं बल्कि यह समारोह तो अन्य समाजों के लिए उदाहरण छोड़ गया है। इतनी बड़ी संख्या का आना और सुरक्षित लौट जाना। कहीं भी नगर में व्यवधान न आने देना। किसी दुकान, खोमचा आदि को नुकसान न होना। ठीक समय पर कार्यक्रम प्रारम्भ होना और निर्धारित समय पर संपूर्ण होना। वक्ताओं को दिए गये विषय और समय में ही बोलना। न कोई माँग और न किसी का विरोध। इन सब बातों ने अन्य समाजों, पत्रकारों, पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों से प्रशंसा बटोरी। पूरे देश में यह समारोह चर्चित रहा। समारोह को लोगों ने अकल्पनीय की संज्ञा प्रदान की। संघ इसे भगवान की कृपा मानता है, और मानता है कि सब कुछ भगवान ने ही करवाया है। ●

हीरक जयन्ती में माननीय 'संरक्षक श्री' का उद्‌बोधन

इस एक सप्ताह में पत्रकारों से मिलता, तो सभी का एक ही प्रश्न होता था-क्या संदेश है? अब मैं न तो ज्ञानी हूँ, न कोई कर्मठता है, न कोई भक्ति है। है तो केवल सद्‌गुरु और परमेश्वर की कृपा मात्र है। यही संदेश है मेरे पास। आप सब लोग जो बैठकर सुन रहे हैं हीरक जयन्ती के समारोह में-बहुत विस्तार से और व्यापक तौर पर क्षत्रिय युवक संघ के संबंध में, क्षत्रिय युवक संघ और राजनीति के संबंध में, क्षत्रिय युवक संघ और संगठन की शक्ति की महत्ता के सम्बन्ध में; सभी वक्ताओं ने अपनी बात कही और हमने सुनी। अब, मैं अन्त में बोलूं तो क्या बोलूं? जो बोलना था वो सब बोल चुके! धूप तप रही है, लोग बैठे-बैठे थक गए हैं, इधर-उधर हलचल दिखाई दे रही है, यह मेरी व्यक्तिगत दुविधा है कि जब लोग जाने शुरू हो जाते हैं उस वक्त मेरे से बोला नहीं जाता। बोलूंगा तो एक ही बात बोलूंगा कि जो कृपा मेरे ऊपर हुई है भगवान की, वो आपके ऊपर भी हो।

केवल बात राजपूतों की नहीं है, तनसिंहजी को जो पीड़ा हुई-**त्रस्त प्राणी वेदना में करुण क्रंदन कर रहे, कर्तव्य पथ पर चलें हम, उनकी पीड़ा को हरें।** ऐसा नहीं कि जो मैं कह रहा हूँ उसके लिए आज का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। लेकिन फिर भी मैं अपनी एक बात कहता हूँ कि जब हम बुजुर्ग हो जाएँ, बाल सफेद हो जाएँ, घुटने जवाब दे दें, आँखों से दिखता न हो, तो अपने उत्तरदायित्व को पीछे आने वाले किसी साथी को सौंप दें। आप परिवार में रहते हैं इसलिए मैं साथी नहीं कह सकता, आप अपने परिवार के किसी वरिष्ठ व्यक्ति को, समझदार व्यक्ति को कार्य सौंप दें। जो मैंने किया। तीन साल से सोच रहा था कि अब मुझे दायित्व से मुक्त होना चाहिए और भगवान का भजन करना चाहिए। मेरे गुरु महाराज का आदेश भी मिल चुका था लेकिन आप लोगों से जो लगाव था, आपके प्रति आसक्ति थी, छोड़ नहीं पाया और अभी कुछ महीने पहले एक ही मिनट में मैंने तय कर लिया कि मैं अब संघ प्रमुख नहीं रहूँगा और तब से मैं संघ प्रमुख नहीं हूँ। तो मेरे साथियों ने एक नया शब्द जोड़ दिया-संरक्षक! सबका रक्षक भगवान है। क्यूँ किसी बिचौलिये की बात करते हैं? मैं बिचौलियाँ नहीं बनना चाहता।

मैं उस परमेश्वर की बात मानता हूँ जो हमारा सृष्टा भी है, जो हमारा पालक भी है, जो हमारा नियामक भी है, जो इस संसार को चलाता है, वही इस संघ को चलाएगा और जो यह विशाल प्रांगण भरा हुआ दिखाई दे रहा है-समुद्र की लहरों की तरह से यह केसरिया लहरा रहा है, यह केसरिया ध्वज फहरा रहा है, क्षत्रिय युवक संघ की गणवेश मुझे दिखाई दे रही है, अनुशासन दिखाई दे रहा है। संख्या के बारे में जो सोचा था उससे कुछ अधिक हो जाने के कारण सरकार के द्वारा जो सावधानी रखने की बात कही थी हमने प्रारम्भ में रखी, लेकिन भीड़ अत्यधिक आ गई तो फिर हम दूरियाँ भी नहीं रख सके, तो यह संदेश भी हम अच्छा नहीं दे पाए। वो हमको अच्छा देना चाहिए था। राष्ट्र की, चाहे वो राज्य की बात हो, हमको उनकी बात को मानना चाहिए। भारत में एक संविधान है, उस संविधान की कभी भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। ऐसा क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है, आपको भी इसी प्रकार का संदेश देता है।

भगवान ने कहा मैं तुम्हें प्यार करता हूँ और तुम भी मुझे प्यार करते हो तो मेरे समीप आओ, पास में आओ। पास में कैसे आएँगे? पूज्य तनसिंहजी ने कहा-हम ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं तो हम हमारे अंत:करण को शुद्ध करें। जैसे आप पूजा-पाठ करते हैं, ऊपर से ही राम-राम करते होंगे लेकिन वहाँ बैठने के लिए आसन बिछाते हैं, शुद्धता का आचरण करते हैं। इसी तरह से भगवान हमारे यह जो हृदय का आसन है, अंत:करण का आसन है, उसमें तब आएँगे जब हमारे अंदर पवित्रता होगी और पवित्रता कहाँ से उत्पन्न होती है? उसके लिए पूज्य तनसिंहजी ने कहा-श्रेष्ठ कर्मों से और श्रेष्ठ कर्म क्या है? भगवान द्वारा निर्देशित, हमारे लिए जो निश्चित किया गया है, जिसके लिये हमारा जन्म हुआ है, वही कर्म करना ही श्रेष्ठ कर्म है। किसी विशेष जाति में, देश में, धरती पर और माता-पिता की कोख में, हमने जन्म लिया है। यह भगवान का विधान है, हमारा विधान नहीं है और जब हम भगवान के विधान को छोड़कर अपना विधान चलाना चाहते हैं तो सफलता नहीं मिल सकेगी। हम लोग देखते हैं, हम जो जबर्दस्तियाँ करते हैं तो परिवार बनते हैं और बिगड़ जाते हैं। हमारी चाह क्या है? भगवान की चाह नहीं है। भगवान की चीजों में हमारा आकर्षण है। भगवान का बनाया हुआ संसार है, वह हमें नजदीक ले जाता है। पत्नी है, पुत्र है, पिता है, पैसा है, सत्ता है, यह अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। शास्त्रों में बताया है कि जीव है, वह दो सत्ताओं के बीच झूल रहा है। एक तरफ परमपिता परमेश्वर उसको अपनी ओर खींच रहा है और दूसरी तरफ यह संसार, यह प्रकृति जो भगवान के द्वारा बनाई हुई है, जिसको हम माया भी कह सकते हैं, वह माया अपनी ओर खींच रही है। तो माया और भगवान के बीच में हम झूला बने हुए हैं। निर्णय हमको करना है, कोई समाज निर्णय नहीं करेगा, कोई संविधान निर्णय नहीं करेगा, कोई विधानसभा कोई लोकसभा यह निर्णय नहीं करेंगे। यह निर्णय हमको करना है। तो मुझे लगता है कि यह निर्णय आप ने कर लिया है। इतनी बड़ी संख्या में सर्व समाज के लोग, चाहे वो राजनेता हों, चाहे वो सामाजिक कार्यकर्ता हों, चाहे किसी भी जाति और धर्म को मानने वाले हों, वो यहाँ आए हैं तो अपने आप नहीं आए हैं। हम ऐसा सोचते हैं कि अपने आप आए हैं, लेकिन यह तो एक ऐसा माहौल बना, माहौल किसने बनाया? यह परमेश्वर ने बनाया।

सुदर्शन चक्र की बात की जाती है। मैं आप लोगों को जब यहाँ देख रहा हूँ तो लगता है सुदर्शन चक्र चला था, वो राजनेताओं को भी यहाँ ले आया, धर्म-धुरंधरों को भी ले आया, डॉक्टरों को भी ले आया, इंजीनियर्स को भी ले आया। इसमें हमारी कोई विशेषता नहीं है। जब यह बात समझ में आ गई तो मैंने प्रयत्न करना छोड़ दिया और जो कोई पूछता, कितनी संख्या आएगी तो कहता भगवान जाने। कौन-कौन बोलेंगे? भगवान जाने। मुझे गाइड करने वाले भी कितने हैं। कृपा है आप सबकी, आपके कारण मैं जीवित हूँ और इसलिए आप की सेवा करना मेरा कर्तव्य है। यह क्षत्रिय युवक संघ यही मेरा संदेश है, यही मेरा जीवन है। **पंछी तो उड़ जाए मगर यह उड़ न सकेगी टहनी रे..** मैं तो एक पेड़ की टहनी बना हुआ हूँ, जिस पर फल लगते हैं तो लोग पत्थर फेंकते हैं। उसके ऊपर पक्षी बैठा है वह तो उड़ जाता है लेकिन टहनी कहीं जा नहीं सकती। मुझे आपके बीच में रहना है, मेरी प्रकृति है, मेरी विवशता है, और उसको मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। उत्तरदायित्व का वहन करना धीरे-धीरे कम करके अब लगभग सौंप दिया है। भगवान राम को भगवान बनाने में वशिष्ठ ने अपनी तपस्या लगा दी, विश्वामित्र ने साठ हजार वर्ष की तपस्या उनको सौंप दी। मेरे पास वैसा कुछ तो है नहीं, लेकिन जो कुछ भी मेरे पास है वो आप सबके लिये छोड़ रहा हूँ।

जय संघशक्ति!

माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह द्वारा प्रदत्त उद्‌बोधन

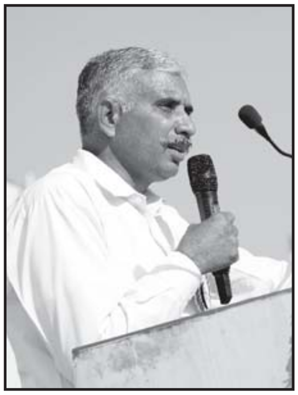

जय संघशक्ति!

या देवी सर्वभूतेषू जाति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

हम त्रेता के समय की कल्पना करें, उस त्रेतायुग में वशिष्ठ जैसे तपस्वी, वाल्मीकि जैसे ऋषि, अत्री जैसे ऋषि, दशरथ जैसे राजा और विदेह राज जनक जैसे लोगों के होते हुए भी जब राक्षसी प्रवृत्ति अपना विस्तार कर रही थी, राक्षसी संस्कृति आदर्श बनती जा रही थी और देवत्व के साथ में अवतरित राम भी जब युवराज बनने के लिए अग्रसर थे, उस समय एक जागृत क्षत्रिय विश्वामित्र ने अपने पुरुषार्थ के बल पर सृष्टि के समस्त ज्ञान को अपने अन्तर में अवतरित कर, ब्रह्मऋषित्व को प्राप्त किया। उनके मन में एक पीड़ा जागृत हुई। उनका हृदय उस अपसंस्कृति के प्रसार से पीड़ित हुआ और उनकी उस पीड़ा ने उस राजकुमार राम को, उस दशरथ पुत्र राम को भगवान राम बना दिया और उनको श्रेष्ठ आर्य संस्कृति के, पुनर्स्थापना के लिए, उस मार्ग पर प्रशस्त कर दिया। हम द्वापर की बात करें, अन्तर में जागृत एक क्षत्रिय, जिसको भगवान कृष्ण के रूप में हम जानते हैं, वो भी उस समय की अपसंस्कृति से पीड़ित हुए, उस अपसंस्कृति से द्रवित होकर पांडवों के रूप में युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव को माध्यम बनाकर उस अपसंस्कृति के समस्त स्रोतों का उन्होंने विनाश कर दिया। हम ढाई हजार वर्ष पूर्व की बात करें, जब यज्ञों के नाम पर लूट और तांडव मचने लगा तब भी एक जागृत क्षत्रिय का हृदय द्रवित होता है और भगवान बुद्ध के रूप में संस्कृति के नाम पर फैली अपसंस्कृति के वे संहारक बनते हैं।

ऐसी ही पीड़ा शताब्दियों के बाद, शताब्दियों की गुलामी के बाद जब भारत देश आजादी की अंगडाई ले रहा था और जब भारत के लोग परमुखापेक्षी होकर उन्हीं लोगों की ओर टुकुर-टुकुर देख रहे थे जो भारत की दुर्दशा के कारण थे, तब एक क्षत्रिय, 20 वर्ष की उम्र थी जिनकी, उन तनसिंहजी के हृदय में एक पीड़ा जागृत होती है और उसका मूर्त रूप होता है-क्षत्रिय यवक संघ। हमने विश्वामित्र की बात की, विश्वामित्र को स्वयं दैवीय शक्तियों से संपन्न राम मिल गए, लेकिन पूज्य तनसिंहजी को इस प्रकार के राम उपलब्ध नहीं थे। कृष्ण स्वयं समस्त दैवीय शक्तियों से संपन्न थे। उनको पांडव मिल गए थे। उनको युधिष्ठिर धर्म के रूप में मिल गया था, भीम कर्म के रूप में मिल गया था, एक ध्येयनिष्ठ अर्जुन मिल गया था लेकिन पूज्य तनसिंहजी के पास में वो पांच पांडव भी नहीं थे और न था उन भगवान का सुदर्शन, जिससे कि वो इस प्रकार का कोई काम कर सकते। भगवान बुद्ध की तरह पूज्य तनसिंहजी व्यष्टिगत उन्नति के मार्ग तक ही सीमित नहीं रह सकते थे क्योंकि उनका जो लक्ष्य था, वह व्यक्ति नहीं था, समाज और राष्ट्र की दिशा को बदलना उनका लक्ष्य था। राम के जो वंशज थे, उन राम के वंशजों में जो बिखरा हुआ संकल्प था, उसको जागृत करना था। पांडवों का जो पाण्डवत्व था, जो युधिष्ठिर का सत्य था, जो अर्जुन की ध्येयनिष्ठा थी, जो उसका शौर्य था, उसका तेज था उसको जागृत करने का प्रण किया था। इसलिए उन पांडवों के पाण्डवत्व को जागृत करके, उसको संगठित करने का मार्ग उन्होंने प्रशस्त किया। वो स्वयं बुद्ध बनने तक सीमित नहीं रहे बल्कि उन्होंने बुद्ध बनने की परम्परा को प्रतिष्ठापित किया।

विश्वामित्र को वशिष्ठ द्वारा प्रशिक्षित राम मिल गए, कृष्ण को द्रोणाचार्य प्रशिक्षित पांडव मिल गए लेकिन पूज्य तनसिंहजी के समय तक इस प्रकार की जो व्यवस्था थी वह व्यवस्था भी छिन्न-भिन्न हो गई थी। जो हमारे गुरुकुल थे, जिनमें इस प्रकार का शिक्षण मिला करता था, वो सारा का सारा इस प्रकार का शिक्षण समाप्त हो गया था, इसलिए अब ना वशिष्ठ थे और ना द्रोणाचार्य उपलब्ध थे। इसलिए पूज्य तनसिंहजी को उस विश्वामित्र की भूमिका के साथ-साथ कृष्ण के उन गीतोक्त कर्म के प्रशिक्षण के साथ-साथ, उस द्रोणाचार्य की भूमिका भी निभानी थी और वशिष्ठ की भूमिका भी निभानी थी। उनको वो आधारभूमि तैयार करनी थी जिस पर गीता का ज्ञान अवतरित किया जा सके। अगली परिस्थिति पूज्य तनसिंहजी के सामने थी कि राम, कृष्ण और पांडवों के वंशज, जो उपलब्ध थे उनके पास में, उनका संकल्प, उनका पुरुषत्व, उनकी ध्येयनिष्ठा, उनका शौर्य, उनका तेज, उनकी दृढ़ता और जो भी क्षत्रिय के गुण होते हैं वो सारे के सारे गुण शताब्दियों से सुप्त थे। लेकिन एक व्यक्ति के जीवनकाल की अवधि निश्चित होती है और उस सीमित अवधि में इस प्रकार का जागरण लाना संभव नहीं था। शताब्दियों के प्रयास की आवश्यकता थी और एक ऐसी प्रणाली की आवश्यकता थी पूज्य तनसिंहजी को जो निरंतर और नियमित रूप से उसमें भाग लेने वालों को उस विश्वामित्र की पीड़ा को जागृत कर सके। विश्वामित्र की पीड़ा को जागृत करके उनको वशिष्ठ और राम दोनों को उनके अंदर जागृत करना था। क्षत्रिय युवक संघ एक ऐसी प्रणाली है जो शास्त्र के अभ्यास द्वारा अन्तर को जगृत करती है और फिर ऐसे अंतर से जागृत लोगों को युगानुकूल शास्त्र अपनाकर, शस्त्र अपनाकर, संसार में हमारे आदर्शों की प्राप्ति के लिए भेजती है।

अभी बात कही गई कि यह कोई विशेष काल सापेक्ष काम नहीं है, कोई परिस्थिति विशेष का भी काम नहीं है बल्कि उस शाश्वत आवश्यकता की पूर्ति है श्री क्षत्रिय युवक संघ जिसकी पूर्ति के लिए नृसिंह अवतार होता है, वराह अवतार होता है, भगवान राम अवतार लेते हैं, भगवान कृष्ण अवतार लेते हैं, और अवतार लेते हैं भगवान बुद्ध, भगवान महावीर आते हैं, रामदेव जी, जांभोजी और जो हमारे क्षत्रिय पूर्वज हुए हैं, जो सारे आए हैं। इस प्रकार के जब लोग आते हैं, तब जाकर इस प्रकार का निर्माण होता है और पूज्य तनसिंहजी ने भी यही प्रणाली अपनाई और इसीलिए क्षत्रिय युवक संघ पुरुष को पुरुषोत्तम बनाने का काम करता है, क्षत्रिय युवक संघ मानव को महामानव बनाने का काम करता है। राजपूत को क्षत्रिय बनाने की प्रयोगशाला है क्षत्रिय युवक संघ। इस प्रयोगशाला में तनसिंहजी ने कार्य आरम्भ किया। वे जानते थे कि सृष्टि का एक शाश्वत नियम है, यहाँ पतन स्वाभाविक है और उत्थान है वो थोड़ा दुरूह होता है, कष्ट साध्य होता है। व्यक्ति को नीचे गिरने के लिए किसी प्रकार का प्रयास नहीं करना पड़ता है लेकिन ऊपर उठने के लिये उसको प्रयास करना पड़ता है। हम जानते हैं, पहाड़ी से यदि पानी को गिराना हो तो उसके लिए कुछ करना नहीं पड़ता, पानी को गिरा दीजिए वह अपने आप नीचे आ जाएगा लेकिन उसी पानी को यदि पहाड़ी पर ऊपर ले जाना हो तो हमको पम्प लगाना पड़ता है। हम जानते हैं कि आकाश से जब तारा और उल्कापिंड गिरते हैं तो स्वत: ही पृथ्वी की ओर आते हैं, गुरुत्वाकर्षण के कारण से ऐसा होता है, उसके लिये उनको प्रयास नहीं करना पड़ता है। लेकिन किसी रॉकेट को ऊपर उठाना हो तो क्रायोजेनिक इंजन लगाना पड़ता है।

यदि व्यक्ति को नीचे गिरना है, व्यक्ति को दुष्प्रवृत्तियों में शामिल होना है, उसको दुष्प्रवृत्तियों का दामन थामना है, उसको जीवन में गलत कुछ काम करने हैं तो उसको कुछ करने का प्रयास नहीं करना है बल्कि सड़क पर चलता हुआ एक साधारण व्यक्ति भी उसका ट्रेनर बन सकता है, उसको प्रशिक्षण दे सकता है। व्यक्ति को यदि अपने जीवन में ऊपर उठना है, व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व में सुधार लाना है, अपने व्यक्तित्व को बदलना है, अपने चिंतन और भावना को बदलना है तो उसके

लिए फिर प्रयास करना पड़ता है और उसके लिए गंभीर पुरुषार्थ की आवश्यकता है और उस गंभीर पुरुषार्थ के साथ-साथ आवश्यकता है उसे बदलने के लिए एक कार्य प्रणाली की। क्षत्रिय युवक संघ एक ऐसी ही कार्यप्रणाली की बात करता है जो नियमित रूप से, जो निरंतर रूप से सत्संग देता है, जो इस प्रकार का अभ्यास करता है। पूज्य तनसिंहजी ने इसी परम्परा को आगे बढाते हुए एक सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली का आगाज किया, उन्होंने बताया और उस मार्ग पर चलते हुए अणुव्रत से महाव्रत की ओर बढाकर सच्चे क्षत्रिय का निर्माण करने की एक कार्यशाला प्रारम्भ की और यही है क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग। पूज्य तनसिंहजी के एक गीत की पंक्ति आती है-**'वह होगा ना नया पाठ, भूला सा फिर से दोहरेगा।'** क्षत्रिय युवक संघ कोई नया सिद्धान्त प्रतिपादित नहीं कर रहा है बल्कि भारत के उस दर्शन को ही प्रतिष्ठापित करने का प्रयास कर रहा है जिसके लिये हमारे महान पूर्वजों ने अपना जीवन जिया। इस प्रकार संघ उसी लक्ष्य के लिए जीने और मरने की बात करता है जिससे हमारे पूर्वजों ने जीना और मरना हमको सिखाया है। क्षत्रिय युवक संघ एक युग सापेक्ष साधना संगठन है और ऐसे लोगों का संगठन जिनका अन्तर जागृत हो। व्यक्तियों को अपने आंगन में बुलाकर उनके अंतरावलोकन की क्षमता विकसित कर उनके अन्तर को जागृत करता है और अंतर को जागृत करके एक ऐसे संगठन का निर्माण कर रहा है जो संसार में एक सतोगुणीय जातीय भाव का निर्माण कर रहा है।

क्षत्रिय युवक संघ में, पूज्य तनसिंहजी द्वारा जागृत इस संगठन की ज्योत के अन्दर पूज्य आयुवानसिंहजी का अभी हमने वीडियो विजुअल देखा, पूज्य नारायणसिंहजी का हमने वीडियो विजुअल देखा। आयुवानसिंहजी का पुरुषार्थ इसमें शामिल हुआ, नारायणसिंहजी की तपस्या इसमें शामिल हुई और पिछले 32 वर्षों से माननीय भगवानसिंहजी के मार्गदर्शन में संघ किस प्रकार से हमारे समाज में सर्व स्वीकार्य हुआ है आज हम इसका उदाहरण जीता जागता देख रहे हैं। क्षत्रिय युवक संघ एक प्रगतिशील संगठन है इसमें किसी प्रकार की कोई अतिश्योक्ति नहीं है। हमें अनुभूत सत्यों पर दृढ़ रहना और नवीन सत्यों को अंगीकार करना सिखाया गया है। हमारे मार्गदर्शकों ने हमें अपने जीवन को आदर्श बनाकर हमको सिखाया है कि साध्य कभी पुराना नहीं हुआ करता है। साध्य तक पहुँचने के लिए जो मार्ग है, वह कभी स्थायी नहीं हुआ करता है। इसी सीख की अनुपालना में हमें हर उस सत्य को दृढ़ करना है जो हमारे पूर्वगामियों ने अनुभव करके इस मार्ग पर चलकर हमको जीना सिखाया है। उसी के अनुरूप नवीन अनुभव के लिए हम स्वयं तैयार हैं यह क्षत्रिय युवक संघ हमको सिखाता है।

आज हीरक जयन्ती हम मना रहे हैं, समाज का उत्साह हमें प्रेरणा दे रहा है, ऐसा लगता है, जाति स्वरूपा माँ आशीर्वाद देने के लिए उमड़ रही है। तनसिंहजी जैसे कह रहे हैं कि इस आशीर्वाद को विनम्रता पूर्वक स्वीकार करना, उस कारण को नहीं भूलना है, जिसके कारण हमको इसका आशीर्वाद मिल रहा है। वो कारण है, दूर बैठे, उस ढाणी में बैठे, उस शाखा के रूप में जो तपस्या की उसका परिणाम हमें यहाँ दिखाई दे रहा है। उन लोगों की वह तपस्या जो सर्द रात्रि में नदी की तलहटी में शिविर के रूप में बैठकर, इस केसरिया ध्वज के सामने पहरा लगाकर, जो नन्हें-नन्हें बच्चे रात-रात को इस प्रकार से पहरा देते हैं, उस तपस्या का यह परिणाम है। उस तपस्या को हमको अब गुणित करना है। हमें पुन: उस शाखा और शिविर स्थल पर लौटना है और मौन तपस्वी के रूप में उन पूर्वगामियों के मार्ग पर हमको लौट जाना है। क्षत्रिय युवक संघ आज यही कहता है, हम समाज माता के पुत्र हैं। निश्चित रूप से हमारी माता की हमारे से बहुत कुछ अपेक्षाएँ हैं और हर समस्या के लिए हमारे से अपेक्षा रहेगी। क्षत्रिय युवक संघ कहता है कि किसी भी अपेक्षा की उपेक्षा नहीं करनी है। लेकिन क्षत्रिय युवक संघ अपनी मूल साधना में किसी प्रकार की शिथिलता लाए बिना हर प्रकार की समाज की जो समस्या है उसका यथाशक्ति और

यथासंभव हर अपेक्षा की पूर्ति अपने योग और अपने बलबूते के अनुसार करता है। क्योंकि क्षत्रिय युवक संघ की जो साधना है वो समाज सापेक्ष है। समाज की हर समस्या हमारी अपनी समस्या है, समाज के विरुद्ध होने वाला प्रत्येक षड़यंत्र हमारे ऊपर होने वाला षड़यंत्र है, समाज पर होने वाला हर आक्रमण हमारे ऊपर होने वाला आक्रमण है लेकिन संघ उसका प्रतिकार अपने हिसाब से करता है, अपने आदर्शों के अनुसार करता है।

आज जो देश में चल रहा है कि जैसे को तैसा, उस परम्परा की हम बात नहीं करते। यह हमारा कभी आदर्श नहीं रहा है। हमारा आदर्श भगवान राम रहे हैं। भगवान राम जब सीता का अपहरण हो जाता है तो वे मंदोदरी के अपहरण की बात नहीं करते बल्कि उस रावण को नष्ट करने का प्रयास करते हैं। हमने देखा कि भगवान श्रीकृष्ण, जब द्रोपदी का चीर हरण होता है, तो दुर्योधन की पत्नी के चीर हरण की बात नहीं करते बल्कि दुर्योधन का, उसके साथियों सहित संहार करते हैं और यही है क्षत्रिय युवक संघ का आदर्श। यही है क्षत्रिय युवक संघ की भूमिका, इसी प्रकार से वो काम करता है। हम दुर्गादास की बात कर रहे थे, अभी सुना, कि औरंगजेब की तरह दुश्मन की संतान को समाप्त करने का काम नहीं करते बल्कि औरंगजेब के पोते और पोती का पालन और पोषण किया उन्होंने, उसी प्रकार का हमारा आदर्श है और यही बात क्षत्रिय युवक संघ हमको कहता है। पूज्य तनसिंहजी तो कहते हैं–'भभकने की प्रतीक्षा में मुझे सहना सिखा देना'। और क्षत्रिय युवक संघ हमें यही बताता है कि हमको उफनना नहीं है, हमको उबलना है। क्षत्रिय युवक संघ का संदेश आज यदि हम सुनते हों तो यही कहता है कि जो संसार को राह दिखाने वाला है, जो संसार को रास्ता दिखाने वाला है, उसको पहले स्वयं को राह को जानना होगा। उसको स्वयं को रास्ता भूलना नहीं है। जो दूसरों में देखना चाहते हैं उसे पहले स्वयं में देखना प्रारम्भ कर दें। इसीलिए तनसिंहजी ने कहा है कि 'निज को न बनाया तो जग रंच नहीं बनता'। पहले स्वयं को बनाओगे तो संसार को अपने पीछे चला पाओगे। यही क्षत्रिय युवक संघ का संदेश है। आइए, आज हम सब इस अद्‌भुत माता के रूप को देखते हुए संकल्प लें। चाहे हम किसी भी जाति से हों, किसी वर्ग से हों, किसी भी धर्म से हों, हम भगवान श्री कृष्ण के उस संदेश को कि–'स्वे स्वे कर्मण्यभिरत: संसिद्धिं लभते नर:', के अनुसार अपने निश्चित किए हुए कर्मों का, अपने निश्चित उस कर्तव्य कर्म का, अपने निश्चित स्वधर्म का पालन करते हुए हम स्वयं अपना कल्याण करें, हम हमारे समाज का कल्याण करें और हम हमारे राष्ट्र का कल्याण करें। यही क्षत्रिय युवक संघ का संदेश है।

जय संघशक्ति!

समस्त निर्माणों में सबसे कठिन निर्माण आत्म निर्माण है। जब कोई अपना आत्म निर्माण करता है, तब वह सब कुछ निर्माण करने की शक्ति अर्जित कर लेता है। व्यक्तियों का निर्माण उससे कुछ कम कठिन है, लेकिन इतना सरल यह मार्ग भी नहीं कि सरलता से वाञ्छित सफलता मिल जाए। ताजमहल बनाने का कार्य व्यक्तित्व निर्माण के कार्य से अधिक सरल है। पर दुर्भाग्य यह है, कि ताजमहल बनाने का कोई साहस नहीं करता, जबकि व्यक्तियों के निर्माण करने के कार्य का हर कोई व्यक्ति दु:साहस कर बैठता है।

–पू. तनसिंहजी

माननीय महावीरसिंह जी सरवड़ी द्वारा हीरक जयन्ती समारोह में प्रदत्त उद्‌बोधन

हम सब आज यहाँ क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना के 75 वर्ष होने पर 'हीरक जयन्ती, डायमंड जुबली' मनाने आए हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना किसने की? पूज्य तनसिंहजी ने, और उनका जीवन कैसा था? बचपन से ही किस प्रकार के संघर्ष से वो गुजरे थे? बाड़मेर में रामदेरिया के ठाकुर बलवंतसिंह जी के घर पर उनका जन्म हुआ, माता मोती कंवर जी के गर्भ से और जहाँ जन्म हुआ वे ठाकुर बलवंतसिंह जी बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आसपास के लोग उनसे राज्य मुद्दों पर राय लेने आया करते थे और उनकी राय से सारे काम करवाते थे। लेकिन तनसिंहजी के जन्म के लगभग 4 साल के आसपास ही उनका स्वर्गवास हो गया। अब बच्चा जब अनाथ हो जाता है तब क्या स्थिति होती है, हम जानते हैं। उस परिस्थिति में, उन संघर्षों में से तनसिंहजी गुजरे। उनकी माताजी ने हमेशा प्रयास यह किया कि वे पढ़ें, आगे से आगे बढें और इसलिए स्वयं को तकलीफ हो रही है, उसके बावजूद भी उनको बाड़मेर भेजा और बाड़मेर में पढ़ने के लिए लगाया गया। वहाँ वे खुद अपने हाथ से रोटी बनाते थे। छोटा बच्चा किस प्रकार की परिस्थिति में से गुजर रहा है? कभी कभार उनकी माताजी जाती और उनके लिए कुछ सामान रख के आ जाती। ऐसी परिस्थितियों में से गुजरते-गुजरते वे चौपासनी स्कूल पहुँचे। चौपासनी स्कूल में जब वे विद्याध्ययन कर रहे थे उस समय उन्होंने उस समय के एक अखबार, प्रजासेवक में एक लेख लिखा, राजपूतों के संबंध में। क्या स्थिति है, और लोग किस तरह से उनके पीछे पड़े हुए हैं। वो जो लेख आया उससे उस समय के जो स्वतंत्रता सेनानी अपने आपको मानते थे, उन लोगों ने तो उसकी आलोचना भी की लेकिन पूज्य आयुवानसिंहजी जो कि मेड़ता में मास्टर थे, उन्होंने उनको पत्र लिखा कि-'शाबाश! आपने बहुत अच्छा प्रयोग किया है और आशा है कि अपने इस विचार को आगे बढायेंगे।'

चौपासनी स्कूल से दसवीं पास करके, उस समय सबसे अच्छी जो प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था थी वह थी पिलानी में, वे पिलानी गए और पिलानी में विद्याध्ययन तो कर रहे थे लेकिन खर्चा कहाँ से लाएँ और इसलिए स्वयं भी कुछ कमाना शुरू करूँ ताकि मेरे माता जी पर ज्यादा जोर नहीं पड़े। हॉस्टल में, राजपूत हॉस्टल में रहते थे, हॉस्टल में रहने वाले हर एक स्टूडेंट को उन्होंने राजी किया कि मैं सुबह-सुबह तुम्हारे सिरहाने नीम का दातुन रख कर जाऊँगा, महीने के आखिर में तुम मुझे जो उचित समझो दे देना। यह पहली प्रक्रिया थी। पिलानी के राजपूत हॉस्टल में बहुत लम्बी चौड़ी जमीन पड़ी है, सुपरिटेंडेंट से इजाजत लेकर उसमें सब्जी उगाना प्रारम्भ किया और सब्जी को बेचकर पैसा कमाना प्रारम्भ किया। इसी बीच उनको लगा कि उनके वहाँ एक ऐसा बन्धु भी है, वो भी मेरी तरह से अपनी फीस तक नहीं दे सकता। तो मैं क्या करूँ? तो उस समय जो इंचार्ज थे वहाँ एजुकेशन ट्रस्ट के, उन पांडे जी से इजाजत लेकर उन्होंने काम करना शुरू किया लाइब्रेरी में। उससे जो पैसा आता था वो उनको देते थे पर इससे भी पार नहीं पड़ती थी। तो उन्होंने आसपास के जो दर्जी थे, उनको कहा कि तुम्हारे सिलाई का कोई ऐसा काम हो जो बहुत ज्यादा साफ नहीं हो, रफ हो, वह मेरे को बता दिया करो, रात को आकर मैं वो सिलाई कर दिया करूँगा। इस प्रकार से उन्होंने पैसा कमा कर केवल अपना खर्चा ही नहीं उठाया, अपने उन

गरीब साथियों का भी खर्चा उठाना प्रारम्भ किया। फिर देखा उससे भी पार नहीं पड़ती है तो कुछ राजपूत परिवार, रईस परिवार, जो वहाँ अध्ययन कर रहे थे उनका ट्यूशन किया और ट्यूशन से जो कमाई हो रही थी वह भी उन लोगों के लिए लगाई।

इस प्रकार की प्रक्रिया करते हुए जो सामाजिक भाव उनमें उमड़ रहा था, उस सामाजिक भाव ने कुछ रूप लेना प्रारम्भ किया। कुछ साथियों से मिल-जुलकर बात करना प्रारम्भ किया। इसी बीच 1994 की दीपावली आई और दीपावली के दिन लोग खुशियाँ मना रहे थे, दीप लड़ी से अपने घरों को सजा रहे थे, उस समय वे अपने कमरे में बैठे सोच रहे थे-क्या इन दीपकों की रोशनी से मेरे समाज में रोशनी हो सकती है? क्या मेरे समाज में वह जागृति आएगी? क्या मेरा समाज खुशियाँ मनाने लायक बनेगा? अगर नहीं बनेगा तो मुझे क्या करना चाहिए? और इस प्रकार के मंथन करने से जो उनके विचार आए, वो उन विचारों के साथ अपने साथियों से मिले और उनको कहा कि हमको कोई संस्था बनाकर सामूहिक रूप से कार्य करना चाहिए और तब क्षत्रिय युवक संघ के नाम से एक कार्य प्रारम्भ हुआ। लेकिन उसकी प्रक्रिया दूसरी थी। उसके अलावा अपने साथ लोगों को जोड़ने के लिये हस्तलिखित पत्रिका चलाते थे। अपने साथियों से लिखवाते, खुद लिखते और जैसे कॉपी भर गई है तो उसको डाक से अपने दूसरे साथियों के पास भेजते, वे उस पर अपनी टिप्पणी करके वापस भेजते। इस प्रकार से सामाजिक भाव को विस्तार दे रहे थे।

इस तरह सामाजिक भाव को विस्तार देते देते उनके मन में जो आई थी, क्षत्रिय युवक संघ की जो स्थापना की, उसका पहला अधिवेशन, क्योंकि माटसाब से उनका बराबर पत्र व्यवहार हो रहा था और माटसाब बराबर उनको प्रोत्साहित कर रहे थे। तो पहला अधिवेशन हुआ जोधपुर में और उस जोधपुर के अधिवेशन में आयुवान सिंहजी माटसाब को अध्यक्ष बनाया गया। प्रस्ताव पास हुए। कुछ दिनों बाद दूसरा अधिवेशन हुआ काली पहाड़ी में, शेखावाटी में और वहाँ सौभाग्य सिंहजी भगतपुरा को अध्यक्ष बनाया गया। लेकिन यह प्रक्रिया चल रही थी उससे वे संतुष्ट नहीं थे। हम सभा करते हैं, प्रस्ताव लाते हैं, प्रस्ताव पास कर लेते हैं, पर क्या उन प्रस्तावों को अपने जीवन में उतारते हैं? अगर नहीं उतारते तो क्या होना चाहिए? उनका विषय संस्कृत था और संस्कृत में गीता उनके पाठ्यक्रम में थी। गीता में जो अभ्यास और वैराग्य की बात आ रही थी उसको बार-बार वे सोच रहे थे कि अभ्यास किस प्रकार से प्रारम्भ किया जाए। क्योंकि अभ्यास होगा तभी जो हम, हमारे अंदर जो दुष्प्रवृत्तियाँ हैं उनको अभ्यास करके बाहर निकाल पाएँगे। उनकी प्रक्रिया जो सोचने की चल रही थी, उसी बीच उन्होंने ग्रेजुएशन कर लिया। नागपुर गए एलएलबी करने के लिए और नागपुर में वहाँ आरएसएस की शाखा को देखा और तब उनके मन में आई कि जो कहावत है 'रसरी आवत जात ते सिल पर पड़त निशान', अगर हम रोज के रोज इस तरह की प्रक्रिया करें, ऐसा अभ्यास करें तो वह अभ्यास एक ठोस रूप लेगा और उससे जो प्रवृत्ति हम बदलना चाहते हैं, जो परिवर्तन हम चाहते हैं, वह परिवर्तन हो सकेगा।

तब उन्होंने, यह जो नया विचार आया, उसे अपनी कार्यकारिणी को सूचित किया कि 21 दिसम्बर, 1946 को मैं जयपुर आ रहा हूँ, आप लोग वहाँ आइए, अपन विचार करेंगे। 21 दिसम्बर को उन्होंने अपना प्रस्ताव रखा। उन्होंने प्रस्ताव रखा तो सभी ने यह कहा कि इसके बारे में जो आप जानते हो, जितनी गहराई से सोच सकते हो, हम नहीं कर सकते इसलिए जैसा आप कहोगे हम को मंजूर है। तो यह जो नई पद्धति है-रोज शाखा लगाना, शिविर लगाना, चिंतन करना, बैठकें करना, इस पद्धति का प्रारम्भ हुआ और 21 तारीख को विचार मंथन करके 22 दिसम्बर को ही निश्चय लिया कि हमको श्री क्षत्रिय युवक संघ इस ढंग से चलाना है। यह जो परिपाटी चली उसमें उस अभ्यास और वैराग्य की प्रवृत्ति के कारण क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में जैसा परिवर्तन आ रहा था, शाखा में जैसा परिवर्तन आ रहा था, उससे वे संतुष्ट हुए

और तब उन्होंने इस प्रकार की प्रवृत्ति को और आगे बढ़ाने का प्रयास किया और तब से लेकर लगातार क्षत्रिय युवक संघ की प्रक्रिया चलती रही। शिविर लगते रहे, शाखाएँ लगती रही और उनको उस समय संचालक बना दिया गया था। 1949 में पुन: उनको संघप्रमुख बना दिया गया। 1954 में आयुवान सिंहजी को संघप्रमुख बनाया गया। 1959 से 1969 तक पुन: पू. तनसिंहजी संघप्रमुख बने। इस समय में अत्यधिक काम किया और फिर उन्होंने सोचा कि इस प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए जो नवयुवक आगे आ रहे हैं उनको मौका मिलना चाहिए।

तब नारायणसिंहजी रेडा को उन्होंने संघप्रमुख बनाया। नारायणसिंहजी ने तनसिंहजी के जीवन काल में ही अत्यधिक परिश्रम किया और क्षत्रिय युवक संघ की जो संस्कारमयी कर्म प्रणाली है, उसमें अद्भुत प्रयोग किए। उन प्रयोगों के माध्यम से जो तरक्की हो रही थी उससे बहुत खुश हुए। 7 दिसम्बर, 79 को तनसिंहजी का स्वर्गवास हो गया और उनके स्वर्गवास के बाद नारायण सिंहजी का कुछ समय बाद ही कुंडलिनी जागरण प्रारम्भ हो गया। उनको तो वो चीज प्राप्त हो गई जिसके लिए साधना की जाती है। और जब उनके कुंडलिनी जागरण प्रारम्भ हो गया तो मुख्य रूप से कार्य भगवानसिंहजी को सौंप दिया। 1989 में उनका 22 अक्टूबर को देहान्त हो गया तब से भगवानसिंहजी ने इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाया और इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते-बढ़ाते आज देखा कि अब नई पीढी को आगे आना चाहिए जो 3 साल से नई पीढी को सारा कार्यक्रम दे दिया था, सारा काम उनसे करवा रहे थे लेकिन इस महामारी के कारण, कोरोना महामारी के कारण, औपचारिक निर्णय नहीं हो सका, क्योंकि वह ओटीसी में होता था और वह शिविर लग नहीं सका। इस साल जुलाई में उन्होंने निर्णय ले लिया कि अब संघप्रमुख की नियुक्ति कर दी जाए और लक्ष्मणसिंह जी को संघप्रमुख की जिम्मेवारी दी जो पहले से संचालन प्रमुख का काम कर रहे थे, और इस नई पीढी ने कार्य प्रारम्भ किया। महामारी थी लेकिन इस कोरोना पीरियड में भी वर्चुअल माध्यम से सभी स्वयंसेवकों को जोड़े रखा, अनेकों कार्यक्रम किए, अनेकों महापुरुषों की जयन्तियाँ मनाई और संघ के शिक्षण को लगातार बढ़ाने की प्रक्रिया चलती रही।

आज अगर हम देखें तो बालकों के अभी तक इन 75 साल में 2726 शिविर हो चुके हैं, इसमें कुछ 4 दिन के, कुछ 7 दिन के, कुछ 11 दिन के, कुछ 15 दिन के। इसके अलावा बालिकाओं के शिविर प्रारम्भ हो गए। क्योंकि सोचा यह गया कि जो संस्कार निर्माण की बात करते हैं तो संस्कार देने वाली पहली गुरु तो माता होती है। इसलिए जब तक माता संस्कारित नहीं होगी तब तक वह अपने बच्चों को कैसे संस्कारित कर सकेगी। इस प्रकार से बालिकाओं के शिविर शुरू हुए, महिलाओं के शिविर शुरू हुए, दंपत्ती शिविर शुरू हुए और स्वयंसेवकों को और अधिक प्रेरणा देने के लिए अलग-अलग ग्रुप में विशेष शिविर भी प्रारम्भ हुए। बालिकाओं के भी 310 शिविर हो चुके हैं। 34,626 बालिकाएँ शिक्षण प्राप्त कर चुकी हैं, 2,33,935 बालक शिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। 45 दंपत्ती शिविर हुए हैं और दंपत्ती शिविरों से लाभ यह हुआ है कि महिलाओं के यह समझ में आने लग गया कि हमारा पति घर के बाहर भी जितना काम कर रहा है वो अच्छा काम है, कोई बुरा नहीं इसलिए घर में एक सौहार्द पूर्ण स्थिति आई, कोई विरोध की बात नहीं रही अन्यथा निश्चित है स्वभाविक रूप से लोग यह सोचते हैं, घर वाले सोचते हैं कि यह तो चले जाते हैं वहाँ और हमारे घर की देखभाल अच्छी तरह नहीं हो पाती है। लेकिन जब से दंपत्ती शिविर शुरू हुए यह भी समस्या खत्म हुई।

पिछले कुछ वर्षों में आंध्रप्रदेश में, तेलंगाना में, चेन्नई में, कर्नाटका में, उत्तरप्रदेश में, मध्यप्रदेश में शिविर प्रारम्भ हुए हैं। शाखाएँ लग रही हैं। मुम्बई, पुणे और सूरत में कई शाखाएँ हैं। एक एक प्रदेश में, एक एक शहर में कई कई शाखाएँ हैं। वर्चुअल कार्यक्रम से अभी हमने आयुवानसिंहजी का शताब्दी समारोह भी मनाया, जगह-जगह भी मनाया गया। इस बीच आवश्यकता थी कि जगह-जगह संपर्क सूत्र होने चाहिए, इसलिए जयपुर में संघशक्ति कार्यालय बनाया, जोधपुर में कार्यालय बनाया,

जैसलमेर में कार्यालय बनाया, बीकानेर में कार्यालय बनाया, बाड़मेर में कार्यालय बनाया और कुचामन में आयुवान निकेतन कार्यालय बनाया। इन कार्यालयों में स्थानीय स्तर पर लोगों से संपर्क रहता है वहाँ की गतिविधि पर आराम से नियंत्रण हो सकता है। इस बीच भगवानसिंहजी मॉरीशस भी गए। जो यहाँ से राजपूत वहाँ जाकर बसे हैं, उन लोगों की भी इच्छा थी कि हमको भी संघ के बारे में बताया जाए। दुबई में हमारे कुछ स्वयंसेवक चले गए, वे वहाँ रोज शाखा लगाते हैं। जापान में, अमेरिका में, इंग्लैण्ड में जहाँ एक-एक, दो-दो स्वयंसेवक हैं वो भी परस्पर मिलकर शाखाएँ लगा रहे हैं। इन कार्यालयों के अलावा बाड़मेर में, शहर से बाहर एक आलोक आश्रम नाम से आश्रम विकसित किया जा रहा है ताकि वहाँ लगातार शिविर लग सकें। वह भी अब लगभग पूरा हो चुका है।

संघ का मौलिक कार्य जो है, वह है संस्कार निर्माण और संस्कार निर्माण की प्रक्रिया जब तक अनेक वर्षों तक नहीं चलेगी तब तक जो हजारों वर्ष से हमारा पतन का मार्ग चल रहा था उसमें रुकावट आकर हम परिवर्तन नहीं ला सकते। इसलिए लगातार नया प्रवाह चलता रहना चाहिए। गंगा बह रही है लेकिन पीछे से बर्फ नहीं पिघलेगा तो गंगा रुक जाएगी और इसीलिए तनसिंहजी ने नारायणसिंहजी को अपने जीवनकाल में जिम्मेदारी दी ताकि वे देख सकें कि कार्य संतोषजनक हो रहा है। नारायणसिंहजी ने अपने जीवनकाल में भगवान सिंहजी को जिम्मेवारी दी ताकि देख सकें कि कार्य ठीक ढंग से चल रहा है और भगवान सिंहजी ने अब लक्ष्मणसिंह जी को जिम्मेवारी दी है, देख सकें कि कार्य ढंग से हो रहा है और देखा है। यह जो आज कार्यक्रम हो रहा है, राजपूत समाज का तो इसमें जोश था ही, भाव बहुत बढ़िया था लेकिन इस पूरी गतिविधि की योजना इस पूरी गतिविधि का क्रियान्वयन, यह सब इस नई पीढी ने किया है और ऐसी नई पीढी को देखकर किसको गर्व नहीं होगा। क्षत्रिय युवक संघ इस प्रकार का काम लगातार करता आ रहा है।

संघ का मौलिक कार्य है संस्कार निर्माण। पर इस संस्कार निर्माण के साथ सामाजिक सरोकार भी परेशान किए बिना नहीं रह सकता। क्योंकि समाज में जो कुछ घटित हो रहा है वो स्वयंसेवकों पर भी घटित होगा और संस्कार निर्माण के साथ लोगों की यह आशा भी बनी कि यह एक संगठन है, यह कुछ कर सकता है। इसीलिए जैसे ही क्षत्रिय युवक संघ प्रारम्भ हुआ था, चौपासनी को अधिग्रहण करने की बात आई और उसका जो आंदोलन हुआ, हालांकि क्षत्रिय युवक संघ बिल्कुल नया-नया था लेकिन उसमें पूरा भाग लिया। आगे बढकर पूरा भाग लिया। उसके बाद जागीर उन्मूलन के समय बहुत से भूस्वामी बिल्कुल बेरोजगार जैसे हो गए थे, उनकी जमीनें चली गई थी, ऐसे लोगों के प्रति भी सन् 55 और 56 में दो आंदोलन किये और उन आंदोलनों के माध्यम से उनका मुआवजा भी बढ़ा तथा उनको, जो भूमिहीन हो गए थे, उनको नहर के ऊपर सिंचित जमीन भी मिली। उसके बाद राजनेताओं की तरफ से माँग आई कि आपका जो इंफ्रास्ट्रक्चर है सब जगह, उसका लाभ राजनेताओं को नहीं मिलता, क्योंकि हमारा समाज वोट नहीं डालता। स्थिति तो यह है कि समाज के सब लोगों का वोटर लिस्ट में नाम भी नहीं है। इसलिए आप उनमें यह जागृति पैदा करो। तब सबके साथ मिलकर 18 जिलों में अलग-अलग दो-दो दिन के शिविर किए गए और इस प्रकार की जागृति पैदा करने का प्रयास किया गया। उसका प्रभाव भी आया। अगले ही चुनाव में संख्या बढ़ी और 27 राजपूत जीत कर आए जबकि उससे पहले 17 ही थे। स्मरण रहे, पहले चुनाव में 160 सीट थी जिसमें से 57 राजपूत एमएलए थे, लेकिन घटते घटते 17 पर आ गए थे। तो एक राजनैतिक चेतना जागृत हो सामाजिक स्तर पर उसका भी प्रयास किया गया। उस प्रताप फाउंडेशन के माध्यम से राजनैतिक चेतना के अलावा राजनीतिक नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच में समन्वय बने, यह भी प्रयास किया जा रहा है। इसके अलावा राजनैतिक नेता, सामाजिक जो कार्यकर्ता हैं उनके साथ मिलकर, उनके

तहत चलकर उनकी जो वाजिब माँगे हैं उनको समझ कर, उनके नेतृत्व में भी काम करें, ऐसा भी प्रयास चल रहा है। व्यक्तिगत हित के लिए संघ काम नहीं करता, व्यक्तिगत हित के लिए जो बात है, उसकी बजाए जो सामाजिक हित की बात है उसको संघ करता है और संघ उसी तरहका काम करता है।

इसी बीच प्रताप फाउंडेशन को आरक्षण का काम दिया गया, सभी संस्थाओं ने मिल के। तो आरक्षण की बहुत बड़ी रैली की गई और उसके बाद हम केन्द्र सरकार से मिले। जब हमने माँग रखी तो उन्होंने कहा कि ओबीसी में आरक्षण नहीं मिल सकता, लेकिन आर्थिक आधार पर आरक्षण के लिए हम क्रिया प्रारम्भ करते हैं। उन्होंने आयोग गठित किया। आयोग ने कार्य प्रारम्भ किया। आयोग कार्य कर रहा था, उसका काम पूरा नहीं हुआ था, इसी बीच सरकार गिर गई और नई सरकार ने उसका इस्तीफा ले लिया। फिर नई सरकार में प्रयास किया गया और उन्होंने भी आयोग गठित किया। उस आयोग की भी रिपोर्ट आने से पहले ही दब गई रिपोर्ट। उसके बाद पिछली सरकार आई, वर्तमान सरकार जो पिछली थी, उस समय वहाँ पार्लियामेंट में गजेन्द्रसिंह शेखावत ने यह माँग उठाई कि आर्थिक आधार पर वहाँ दो आयोग बन चुके, एक राज्य सरकार ने आयोग बना दिया, सरकार ने हाँ भी भरी थी, वह लागू क्यों नहीं किया जा रहा है। केन्द्र सरकार ने आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू किया। प्रतापसिंह जी वगैरह, जो उस समय कांग्रेस के मंत्री थे, उन लोगों ने भी उस बात को आगे बढ़ाया और वो आर्थिक आधार पर आरक्षण चालू हुआ। उसमें जो शर्तों में, पात्रता में थोड़ी सरलता बरतने की आवश्यकता थी उसके लिए भी कार्य प्रारम्भ किया गया और उस कार्य के लिए एक अलग से संगठन खड़ा किया-क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन, जो संवैधानिक तरीके से अपनी माँग सरकार तक उच्च स्तर तक पहुँचाता है और इस आर्थिक आधार आरक्षण में जो पात्रता की सरलता बनी है वह उसी का लाभ है। यह बात जब मुख्यमंत्री तक पहुँचाई गई तो धर्मेन्द्रसिंहजी, प्रतापसिंहजी आदि ने भी मुख्यमंत्री जी से कहा कि यह आवश्यक है और उन्होंने इसको स्वीकार किया।

इसी प्रकार जो विभिन्न व्यवसायी लोग हैं, वकील हैं, वकीलों से बुलाकर बात की गई, आप सब मिलकर एक बनो, आप समाज का क्या काम कर सकते हो, तय करो। जो मास्टर हैं, कर्मचारी हैं, उनसे अलग से बात की गई। जो डॉक्टर हैं उनसे अलग से बात की गई। जो अधिकारी हैं उनको भी बुला के बात की गई। विभिन्न व्यवसायों के लोगों से बात करके और क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के माध्यम से एकता और सामाजिक भाव जागृत करने का प्रयास किया गया। विभिन्न समाज के जो लोग हैं, उन लोगों में भी हमारे प्रति जो दुर्भावना है उसको दूर किया जाए, इसलिए एससी के लोग, जो अब तक यह समझते थे, जिनको इस तरह का प्रचार किया जाता है कि इन लोगों ने तुम्हारा शोषण किया, इन लोगों ने तुम्हारा हमेशा बुरा किया, उनके चिंतकों को बुलाकर, साथ बैठकर बताने का प्रयास किया गया। उनका कहना था कि आपके लोग केवल 8% हमारे प्रति अन्याय करते हैं और ओबीसी के लोग बाकी सब हैं। लेकिन आपके लोगों में कमी क्या है, घोड़ी पर चढ़े हुए दूल्हे को उतारकर अपनी मूंछ तान लेते हो, कोई पास नहीं आता है। क्या जरूरत है, हमारे सोचने की बात है, वो अपनी घोड़ी लाए हैं, उनकी अपनी जैसी पसंद है वैसे चलेंगे। हम उसमें क्यों ऐतराज करें? वो भी ईश्वर की संतान हैं हम भी ईश्वर की संतान हैं, भगवान ने उनको वहाँ रख रखा है हमको यहाँ रख रखा है तो इसमें दुराव किस बात का है? हमको इस प्रकार के कृत्य नहीं करना चाहिए। उनको हमने आश्वासन दिया कि आपको जहाँ कहीं भी शंका हो तो हमको बताइए, हम उसको दूर करेंगे। पर हमने कहा आप लोग भी करते क्या हो कि यहाँ से बिंदोरी निकल रही है तो ठाकुर साहब के घर के सामने जाकर डीजे बजाना, हालांकि रास्ता दूसरी तरफ है, लेकिन जाएँगे इधर से ही। कृपया वह भी बंद कीजिए, आप भी थोड़ा आगे बढ़िए हम भी आगे बढ़ेंगे। इसी प्रकार, कायमखानी समाज को

बुला के,उनके नेताओं को बुला के बातचीत की गई। समाज के, विभिन्न समाज के लोगों से, अलग-अलग बुला बुलाकर उनके साथ वार्ता कर रहे हैं और हमारी आपसी समस्याओं को दूर करके, उनकी बात सुनकर उनकी समस्या को दूर करने का प्रयास करते हैं, ताकि एक सामाजिक सौहार्द बने और हमारा राष्ट्र आपस में जूता फजीती करने वाला नहीं रहे। क्योंकि बहकाने वाले भी बहुत आते हैं जो बहका रहे हैं।

इसी प्रकार हमारे महापुरुषों पर लोग कब्जा कर रहे हैं। सुहेलदेव हमारे थे, मिहिर भोज हमारे थे, पृथ्वीराज चौहान गुज्जर थे, ये इस तरह की बातें हो रही हैं। पूंजा.. राणा पूंजा भील था, रामदेव जी पर भी जो थोड़े से दिनों की बात है, उस पर भी अधिकार हो रहा है कि वो तो हमारे थे यह जो इस प्रकार की प्रक्रिया चल रही है, उसके खिलाफ भी प्रयास किया जा रहा है और सबको सही जानकारी दी जाती है पानरवा के परीक्षित सिंह जी ने पूरी वंशावली निकालकर, कि राणा पूंजा से लेकर अब तक हमारी कैसे वंशावली चल रही है, वह निकाल कर बड़ा सम्मेलन किया था, उसमें सारा बताया है। और गुजरात के गवर्नमेन्ट पोर्टल पर पृथ्वीराज चौहान को गुज्जर बताया हुआ था। हमने रिपोर्ट किया, आपके गुजरात में गुज्जर जाति है ही नहीं इसीलिए ओबीसी में गुज्जर का नाम नहीं है और पृथ्वीराज चौहान गुर्जराधिपति थे। गुर्जराधिपति मतलब गुर्जर देश, वो जाति का नाम नहीं है देश का नाम है, मारवाड़ का कोई अधिपति हो तो हर मारवाड़ी का यह अधिकार बनता है क्या कि यह तो मेरे पूर्वज हैं? यह गलत परम्परा बंद करो। इसी प्रकार राणा पूंजा के बारे में सारी बात बताई गई। इस प्रकार की प्रक्रिया हमारे खिलाफ जो हो रही है उसमें केवल वामपंथी नहीं, दक्षिणपंथी भी कर रहे हैं काम। वो भी वोटों के लालच में, वामपंथी भी वोटों के लालच में। राजनीतिक दल उकसावा दे रहे हैं उन लोगों को, इसलिए राजनीतिक दलों तक भी यह बात पहुँचनी जरूरी है, जो क्षत्रिय युवक संघ पहुँचा रहा है, अपने इस माध्यम से, क्षात्र पुरुषार्थ के माध्यम से।

हम आज जो इतनी बड़ी संख्या में यहाँ पहुँचे हैं, समाज का बहुत बड़ा आभार मानता है क्षत्रिय युवक संघ। क्षत्रिय युवक संघ को कभी समाज ने दुत्कारा नहीं। सैंकड़ों शिविर हमारे लग रहे हैं, अभी पिछले 2 साल में कोरोना की वजह से नहीं लगे वरना 100 से ऊपर एक सालमें शिविर लगते हैं और दाल-पानी का सारा इंतजाम यह समाज करता है। यह समाज का योगदान है, सहयोग है। आज भी, इस कार्यक्रम में भी, किसी के पास माँगने नहीं गए, लेकिन जिस किसी के पास भी यह कहने गए कि यह कार्यक्रम हो रहा है, लोगों ने आगे बढकर सहयोग किया है। और यही कारण है आज ये लाखों की संख्या में आप विराजमान हैं। क्षत्रिय युवक संघ की जितनी विशेषता है उस विशेषता को आगे बढ़ाने में समाज जितना सहयोग कर रहा है, वह सहयोग हमें मिल रहा है, हम संतुष्ट हैं। समाज में अनेक संस्थाएँ हैं और समाज की आवश्यकताएँ भी अनेक हैं। बहुत सारी आवश्यकताएँ हैं, इसलिए किसी भी आवश्यकता की पूर्ति के लिए जो संस्था काम करती है, उसको करने देना चाहिए। उसमें व्यवधान नहीं डालना चाहिए। वो जो काम कर रहे हैं उनको जब कभी मदद की जरूरत हो तो मदद करें और ऐसा लगे कि वो जो काम कर रहे हैं वो गलत है तो आप चुप रहो, लेकिन किसी के व्यवधान मत डालो। इस प्रकार का परस्पर सहयोग बनेगा तो समाज को अनेक संस्थाएँ, अनेक प्रकार के काम करके आगे बढ़ाने का काम करती रहेगी और समाज में एक सौहार्द का, एक सामाजिक भाव का बराबर प्रादुर्भाव होता रहेगा। भवानी निकेतन अभी स्वागत करके गए हैं आपका, शिवपालसिंह जी। जालमसिंहजी साहब ने हमेशा, हमको चला कर कहा है कि कार्यक्रम बड़ा करोगे तो हमारे यहाँ करोगे। हमने कहा भी नहीं, उससे पहले ही, इस बार भी चलाकर भगवानसिंह साहब के पास समाचार भेजा कि कार्यक्रम करो तो हमारे यहाँ करो। अनेकों कार्यक्रम यहाँ हुए हैं, हम उनका आभार प्रकट करते हैं। सहयोगी भाव को जागृत करने के लिए जो जयंतियों में आप लोग आते हैं उसके लिए भी आप

सबका आभार है। यहाँ राजेश कालानी फाउंडेशन की तरफ से वैक्सीनेशन का काम चल रहा है, उनका भी हम आभार प्रकट करते हैं। टेंट हाउस ने 15 तारीख से अब तक लगकर इतना बड़ा, इतनी बड़ी व्यवस्था की है उनका भी हम आभार प्रकट करते हैं। क्षत्रिय युवक संघ का साहित्य, संघशक्ति पत्रिका और पथ-प्रेरक नाम का एक अखबार छपता है और तनसिंहजी की लिखी हुई जितनी भी पुस्तकें हैं, वो सब छपती हैं और उन सबको एक ही प्रेस गजेन्द्र प्रिन्टर्स से छपाया जाता है और गजेन्द्र प्रिन्टर के मालिक श्री कमलेश शर्मा, उसको अपनी पत्रिका मानकर उसमें सहयोग देते हैं और इसी कारण से आज तक कभी भी हमारी पत्रिकाएँ लेट नहीं हुई। हमेशा समय पर छपती हैं। साहित्य छपता है, समय पर छपता है। हालांकि कमलेश जी खुद प्रेस नहीं आते, लेकिन जिस दिन आते हैं और उनके भक्तों को यह पता चलता है कि आज कमलेश जी प्रेस गये हैं तो सारे भक्त चर्चा यही करते हैं कि आज जरूर उन संघ वालों का कोई काम चल रहा होगा इसलिए प्रेस में गए हैं। इतनी आत्मीयता से वो हमारा साहित्य छापते हैं, उनका आभार है। उन्हीं के यहाँ काम करने वाले सुनील जी, अभी जो यह स्मारिक छपी है इस अवसर पर, रात और दिन काम किया उन्होंने, 15 दिन में कब कब विज्ञापन आ रहे हैं, उनको तैयार करना, उनको अप्रूव करवाना और छापना, रात को भी उन्होंने सारी रात बैठ के काम किया है, उनका भी हम आभार प्रकट करते हैं। पुलिस विभाग ने पूरा सहयोग किया, राज्य अधिकारियों ने पूरा सहयोग किया और सब जगह जैसे हमारी व्यवस्था हमने बनाई थी उसको सही मानते हुए वहाँ वैसी ही उन्होंने व्यवस्था की। इसके लिए उनका भी हम आभार प्रकट करते हैं।

जय संघशक्ति!

श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयन्ती पर क्षत्रियों का संकल्प

यही समय है, सही समय है, क्षत्रियों का अनमोल समय है।।
यह समय है, साझा स्वप्न देखने का।
यह समय है, साझा संकल्प करने का।
यह समय है, साझा प्रयत्न करने का।
यह समय है, सब भाइयों को साथ बैठाने का।
यह समय है, उप जाति का भेद मिटाने का।
यह समय है, समाज को शिखर पर ले जाने का।
यही समय है, सही समय है, क्षत्रियों का अनमोल समय है।।
असंख्य क्षत्रियों की शक्ति है, हर तरफ देश की भक्ति है।
उठो क्षत्रियों! कुछ ऐसा नहीं
जो कर ना सको, कुछ ऐसा नहीं जो पा न सको।
तुम उठ जाओ, तुम जुट जाओ, सामर्थ्य को अपने पहचानो।
कर्तव्य को अपने सब जानो, क्षत्रिय युवक संघ को शिखर पर ले जाओ।
यही समय है, सही समय है, क्षत्रियों का अनमोल समय है।।

– चीफ इंजीनियर आसुसिंह लाछड़ी, आई ई एस एवीएसएम,
वीएसएम, उप महानिदेशक (बी.आर.ओ.)

हीरक जयन्ती कार्यक्रम के माननीय वक्ताओं के उद्‌बोधन का सार संक्षेप

गजेन्द्रसिंह शेखावत
जलशक्ति मंत्री,
भारत सरकार

श्री महावीरसिंह जी ने अपने वक्तव्य में श्री क्षत्रिय युवक संघ की 75 वर्ष की यात्रा का वृतांत हमारे सामने रखा। 20 साल के एक युवक के रूप में पूज्य तनसिंहजी के मन में समाज के भविष्य की आने वाली चुनौतियों को, पिछले पाँच हजार साल से जो क्षरण समाज में हो रहा है, समाज के चरित्र में जो पतन लगातार हो रहा है, उसके कारण से आने वाली चुनौतियों को दृष्टिगत रखते हुए जो विचार उनके मन में कौंधा था, आज वह विचार 75 वर्ष तक अनवरत साधना करते हुए इस मुकाम पर पहुँचा है कि आज देश के कोने-कोने से और राजस्थान के सुदूर गाँव-ढाणी से हम सब लोग यहाँ श्री क्षत्रिय युवक संघ के 'हीरक जयन्ती' समारोह में उपस्थित हुए हैं। एक व्यक्ति के जीवन में 75 साल का कालखंड बहुत बड़ा समय होता है। जो हमारी सनातन संस्कृति है, जो हमारी सनातन मान्यताएँ हैं, उसके अनुसार 75 साल के इस कालखंड में व्यक्ति के जीवन के तीन चरण पूरे हो जाते हैं लेकिन एक संगठन के जीवन में 75 वर्ष का कालखंड महत्त्वपूर्ण निश्चित रूप से हो सकता है लेकिन एक व्यक्ति के जीवन में उसकी जितनी विशालता है, संगठन के लिए उतनी नहीं हो सकती। और एक ऐसा संगठन जो विपरीत वातावरण के होते हुए भी समाज में संस्कार निर्माण के लिए काम कर रहा हो, ऐसे संगठन के लिए 75 वर्ष का कालखंड बहुत लम्बा कालखंड नहीं कहा जा सकता।

समाज में संस्कारों का निर्माण और समाज चरित्र को बनाए रखने का चुनौतीपूर्ण कार्य जो धारा के विपरीत तैरने के समान कठिन है, हजारों वर्षों के क्षरण को रोक कर समाज में चरित्र निर्माण के संस्कारों की पुनर्स्थापना के इस कार्य को श्री क्षत्रिय युवक संघ ने जिस तरह से किया है, आज हम सब लोग उसे नमन करने के लिए एकत्रित हुए हैं। संस्कार शब्द संस्कृति से निकला है और संस्कृति का अर्थ है हमारे पूर्वजों के वे गुण जो हमें आज भी प्रेरणा देते हैं। वे गुण ही हमारे संस्कार हैं। ऐसे सारे गुण पिछले कई वर्षों के विपरीत वातावरण के कारण कहीं ना कहीं मलिन हुए हैं। त्याग, बलिदान, दायित्वबोध पर-दुख कारतरता, तेज, शौर्य, संघर्षप्रियता, श्रेष्ठता और धर्म की रक्षा, इन सबके साथ सब के प्रति ईश्वरीय भाव-यह सब जो गुण हमारे पूर्वजों के आभूषण थे, उन्हीं गुणों ने उन्हें कालजयी और अमर बनाया। आज जिनके महान चरित्र के स्मरण मात्र से ना केवल हम लोग, अपितु पूरा देश और विश्वभर के लोग रोमांचित होते हैं, हमारे उन पूर्वजों के गुणों को वापस हम अपने समाज में किस प्रकार प्रतिष्ठित करें, इसके लिए क्षत्रिय युवक संघ काम कर रहा है। आज विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है कि व्यक्ति के जो गुण हैं, वे पीढी दर पीढी प्रवाहित होते हैं। लेकिन विपरीत परिस्थितियाँ माता-पिता द्वारा अर्जित संस्कारों को कहीं ना कहीं सुषुप्त करने का काम करती है और श्री क्षत्रिय युवक संघ उन सारे संस्कारों को वापस अनुकूल वातावरण देकर पुनर्जागृत करने की साधना में रत है। श्री राम, श्री कृष्ण, विश्वामित्र, शिवि, हर्ष, मिहिरभोज, महावीर, बुद्ध, प्रताप, छत्रसाल, आल्हा-उदल, पाबू, हडबू ऐसे अनेक नाम, ऐसे अनेक चरित्र जो अमर हो गए, उन सब पूर्वजों के गुण हम सबके भीतर दैवीय तत्व

के रूप में कहीं ना कहीं सुषुप्त अवस्था में विद्यमान हैं। उन सब गुणों को पुन: जागृत करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ संस्कार निर्माण की पाठशाला के रूप में काम करता है। शाखाओं, शिविरों व विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अनुकूल वातावरण देकर इन गुणों के संवर्धन की यह यात्रा निश्चित रूप से कठिन है लेकिन परम पूज्य तनसिंहजी का दिया हुआ यह विचार, यह मार्ग निरंतर एक नई ऊर्जा के साथ समाज में चेतना के व्यापक जागरण के लिए काम कर रहा है। आज यहाँ उपस्थित लक्षाधिक लोग इस बात के गवाह हैं कि समाज के चरित्र के निर्माण में श्री क्षत्रिय युवक संघ ने निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी भूमिका का निर्वहन किया है।

यह राजनैतिक मंच नहीं है, लेकिन कुछ राजनीतिक बातें भी यहाँ हुई। उन्हें सुनकर मेरे मन में भी उहापोह जगी कि राजनीतिक बात की जाए या नहीं लेकिन मेरे भीतरका स्वयंसेवक जीत गया और राजनीतिज्ञ हार गया। मैं आज गर्व के साथ कह सकता हूँ कि इस संगठन के माध्यम से बिना किसी भेदभाव के हम केवल और केवल संगठन के लिए, केवल और केवल क्षत्रिय जाति के कल्याण के लिए और जिस कल्याण में संपूर्ण विश्व का कल्याण निहित है, उसके लिए काम करते हुए आगे बढ रहे हैं।

राजेन्द्र राठौड़
उपनेता प्रतिपक्ष,
राजस्थान

मैं पिछले कई वर्षों से सार्वजनिक जीवन में हूँ, कई रैलियों और समारोहों का हिस्सा रह चुका हूँ लेकिन मैं निसंकोच कह सकता हूँ कि जिस प्रकार का विहंगम दृश्य और संघ का यह विराट स्वरूप मुझे आज दिखाई दे रहा है मैंने अपनी जिन्दगी में कभी नहीं देखा। और मैं यह भी कहूंगा कि यह सम्मेलन काल के कपाल पर एक ऐसी रेखा खींच कर जाएगा जो कभी मिट नहीं सकेगी। राजस्थान की राजधानी में आज लाखों क्षत्रिय आए हैं और क्षत्रियों के लिए कहा जाता हैकि क्षत्रिय सुरक्षा का भाव देता है, भय का नहीं। यह समूह जब अपने घर की ओर लौटेगा तो लोग याद करेंगे कि इस प्रकार का अनुशासन भी किसी समाज ने दिखाया। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि जो क्षरण को रोके वही क्षत्रिय है और हमारा इतिहास सभी प्रकार के क्षरण को रोकने में दी गई कुर्बानियों से अटा पड़ा है। जब धरती की स्वतंत्रता का क्षरण हो रहा था, तब महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी में संघर्ष किया। जब मान मर्यादा का क्षरण होने का संकट आया तो धधकते जौहर में पद्मिनी कूद पड़ी। आज भी सभी प्रकार के क्षरण को रोकने के लिए क्षत्रिय युवक संघ का शिक्षण हमारे सामने है।

दुनिया में जब राजतंत्र से लोकतंत्र की यात्रा प्रारम्भ हो रही थी, फ्रांस, रूस आदि में जब रक्तरंजित क्रांतियाँ हो रही थी उस समय राजस्थान के हमारे शासकों ने लोकतंत्र को अंगीकार किया। अपनी रियासतें प्रजातंत्र के लिए सहर्ष सौंप दी। एक समय ऐसा था जब राज लेने के लिए तलवार उठानी पड़ती थी, सिर कटवाना पड़ता था। फिर समय परिवर्तन हो गया। राजतंत्र के स्थान पर लोकतंत्र की आहट सुनाई दे रही थी। हिन्दुस्तान की आजादी से एक वर्ष पहले एक तपस्वी नौजवान तनसिंहजी 20 वर्ष की उम्र में चिंतातुर थे कि बदलते समय में मेरे समाज की भूमिका क्या होगी? तब जिस विचार ने जन्म लिया, उस विचार का विराट रूप आज हम देख रहे हैं। मैंने कई सामाजिक संगठनों को बनते और बिगड़ते देखा है, चुनाव के समय उनकी सक्रियता देखी है, फिर उनकी निष्क्रियता देखी है और उनको नेपथ्य में जाते देखा है लेकिन क्षत्रिय युवक संघ संस्कारें के निर्माण की बात करता है, राष्ट्र निर्माण की बात करता है। यह एक ऐसा कारखाना है जो संस्कारों के निर्माण के लिए निरंतर

चलता रहता है। किसी दूरस्थ गाँव में किसी पेड़ के नीचे शिविरों, शाखाओं के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण की बात करने वाला अनूठा संगठन है संघ। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि भगवानसिंह जी साहब के निष्पक्ष और पवित्र नेतृत्व का ही परिणाम है कि राजस्थान की राजधानी में सड़कों पर जगह नहीं बची है। यह लोकतंत्र है, इसमें मत की पेटी से राजा निकलता है और एक समय ऐसा आया था कि आमजन में चर्चा थी कि क्षत्रिय अपने मत का प्रयोग करना नहीं जानते तब प्रताप फाउंडेशन के नेतृत्व में राजस्थान की 200 विधानसभाओं में शिविर लगने प्रारम्भ हुए और उसका सार्थक परिणाम भी हमारे सामने आया। आरक्षण के मुद्दे पर भी 2003 में श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में संघर्ष का बीड़ा उठाया गया। कितने उतार-चढ़ाव, कितने झंझावतों से गुजरते हुए उस राह पर प्रताप फाउंडेशन बढ़ता रहा और मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि आज सवर्ण जाति के लोग राजस्थान में जिस आरक्षण का फायदा ले रहे हैं उसका जनक कोई है तो क्षत्रिय युवक संघ है।

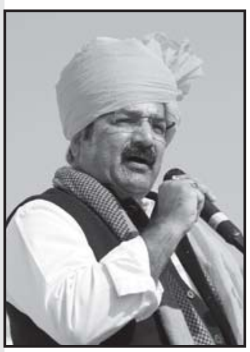

प्रतापसिंह खाचरियावास

कैबिनेट मंत्री, राजस्थान सरकार

जो आन बान शान के साथ स्वाभिमान के लिए मरने की ताकत रखता है, जो धरती के मान और सम्मान के लिए, औरों को बचाने के लिए, दलित और पिछड़ों को बचाने के लिए लड़ने और मरने की ताकत रखता है वही असली क्षत्रिय कहलाता है। क्षत्रिय युवक संघ की जब स्थापना हुई तब एक ही संकल्प था कि हम राम के सिद्धान्त पर चलें, हम कृष्ण के सिद्धान्त पर चलें। हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि जो भगवान के जैसा व्यवहार करता है वह क्षत्रिय कहलाता है। जो जाति, धर्म के आधार पर किसी से भेदभाव नहीं करता वही सच्चा क्षत्रिय है। क्षत्रिय युवक संघ का आज का मंच भी यही दर्शा रहा है। सभी धर्म, सभी समाज एक मंच पर हैं। आज यह केसरिया रंग से भरा हुआ मैदान कह रहा है कि जब भी भारत को, हिन्दुस्तान को जरूरत पड़ेगी तो क्षत्रिय अपनी गर्दन कटा देगा लेकिन इस केसरिया की शान, मान और सम्मान की हमेशा रक्षा करेगा। क्षत्रिय देश, धर्म और संस्कृति के लिए बलिदान होने की ताकत रखता है, इसीलिए जब भारत के तिरंगे झण्डे का निर्माण हुआ तब सबसे ऊपर केसरिया रंग रखा गया। यह हमारी आन, बान, शान और स्वाभिमान का प्रतीक है, वीरता का प्रतीक है, बलिदान का प्रतीक है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की जरूरत क्यों पड़ी, क्योंकि यह भारत की और मानव मात्र की बात करता है। आप सभी से मेरा यह आह्वान है कि यहाँ से जब जाएँ तो एक संकल्प लेकर जाना कि जमीन हमारी माँ है, हमारी पहचान है, हमारे गाँव हमारी पहचान है। चाहे कुछ भी हो जाए आप गाँव की जमीन कभी मत बेचना क्योंकि जमीन से आपकी पहचान बनी है। राजपूत का अर्थ है धरतीपुत्र। जो धरती के लिए, उसकी रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दे वही राजपूत है। यह धरती है महाराणा प्रताप की, बलिदानी पन्नाधाय की, राव शेखा जी की, गोगाजी की और ऐसे ही अनेक महापुरुषों की। इस पवित्र धरती पर प्रत्येक जगह भगवान बसते हैं। ऐसी ही भक्ति और शक्ति की धरती पर आज आप सब केसरिया बाना पहनकर आये हैं। आज का यहाँ का अनुशासन सबको यही संदेश दे रहा है कि यह केसरिया बाना हिन्दुस्तान की संस्कृति की रक्षा के लिए बना है। इसी केसरिया बाने को पहनकर हमारे पूर्वजों ने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए बलिदान दिए हैं। हमारे पूर्वज बिना किसी जाति, धर्म के भेदभाव के सभी की रक्षा के लिए लड़ते थे और अपने प्राणों का बलिदान

देते थे इसलिए सभी उनका सम्मान करते थे। आज लोकतंत्र में भी जमाना आपकी तरफ देख रहा है। जिस गाँव में आप रहते हैं उस गाँव के हर क्षत्रिय और पिछड़े की, हर जाति और धर्म के व्यक्ति की रक्षा करना आपका दायित्व है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी यही हमें सिखाता है।

धर्मेन्द्रसिंह राठौड़

कांग्रेस नेता

श्री क्षत्रिय युवक संघ की 75 वर्ष की जो त्यागमय यात्रा रही है, उसका जीता जागता उदाहरण है इस विशाल ऐतिहासिक रैली का यह अभूतपूर्व और विहंगम दृश्य। ऐसी रैली राजस्थान में न हुई है, न होगी। यह अपने आप में क्षत्रिय युवक संघ की साधना का साक्षात स्वरूप है। कितना इसमें अनुशासन है, कितने संस्कार हैं, क्षत्रिय के गुण क्या हैं, इस रैली में सबको उनकी झलक दिखाई पड़ रही है। आप जितने लोग इस कार्यक्रम में पधारे हैं, सभी साधुवाद के पात्र हैं और जिस प्रकार से स्वयंसेवक पिछले कई दिनों से भवानी निकेतन प्रांगण में कचरा उठाने से लेकर पूरी व्यवस्था में दिन-रात जुटे हैं यह देखने वाली और सीखने वाली बात है। वे सभी बधाई के पात्र हैं। मेरे उद्‌बोधन का विषय है- सामाजिक समारोह की महत्ता और श्री क्षत्रिय युवक संघ। सामाजिक समारोह के महत्ता हम सब जानते हैं। जब हम इकट्ठा होते हैं, एक साथ बैठते हैं, परस्पर संवाद करते हैं तो यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात है। श्री क्षत्रिय युवक संघ एक गैर राजनीतिक संगठन है जो समाज में संस्कार निर्माण का कार्य करता है। यह जो सभी राजनीतिक दलों के लोग एक मंच पर, एक झण्डे के नीचे बैठे हैं, यही क्षत्रिय युवक संघ की पहचान है। सबका विश्वास है कि यह संगठन अपने स्वयं के लिए कुछ नहीं करता, किसी राजनीतिक दल के या किसी व्यक्ति विशेष के दबाव में काम नहीं करता। इसी का प्रमाण है कि सभी राजनीतिक दलों के लोग आज यहाँ दाएं और बाएं बैठे हैं और संघ के संरक्षक और संघप्रमुख मंच के बीच में बैठे हैं। इसका अर्थ है कि हम सभी उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं और उनका सम्मान करते हैं।

भूपेन्द्रसिंह चुडासमा

पूर्व मंत्री, गुजरात सरकार

75 वर्ष पूज्य तनसिंहजी ने एक बीज बोया। आयुवान सिंहजी और नारायण सिंहजी ने तपस्या द्वारा उस बीज को पौधा बनाया और आज भगवानसिंहजी ने उस पौधे को एक विराट वृक्ष बनाकर समाज के सामने खड़ा कर दिया है। मैं गुजरात की ओर से आप सबको जय संघशक्ति और जय माताजी अर्पण करता हूँ। गुजरात में अक्टूबर, 1957 में श्री क्षत्रिय युवक संघ का पदार्पण हुआ। आजादी के बाद में जिन्होंने सर्वप्रथम अपना राज्य सरकार को अर्पण किया था, उन प्रजावत्सल कृष्णकुमार सिंहजी की अध्यक्षता में भावनगर बोर्डिंग में संघ का सम्मेलन हुआ था। 1967 में मेरे गाँव में पूज्य तनसिंहजी पधारे थे और मैं भी उस शिविर में था। तब से लेकर गुजरात में हर जिले में संघ की शाखाएँ और शिविर लग रहे हैं। आज बालकों के साथ-साथ बालिकाओं के भी शिविर गुजरात में चल रहे हैं। आज जब इतनी बड़ी संख्या में हम सब उपस्थित हैं तो समाज को एक संदेश भी देना चाहिए कि हम सदा से देश के लिए मरते रहे हैं और अब देश के लिए जीने का वक्त आया है। हम शिक्षित बनें, समाज के लिए दीक्षित बनें यही आज का संदेश होना चाहिए। आज के इस कार्यक्रम का अनुशासन हमारी सफलता का प्रमाण है। आज के समय में देश और समाज की जो भी समस्याएँ हैं उन्हें हल करने में

श्री क्षत्रिय युवक संघ पीछे नहीं रहेगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

जागृति बा हरदासकाबास
वरिष्ठ स्वयंसेविका

जो क्षत्रिय युवक संघ के मार्ग पर चलता है उसमें परिवर्तन आता ही है। मैं एक नारी हूँ, मुझ में भी निश्चित रूप से संघ की वजह से बदलाव आया है। संघ हमें बताता है कि तुम एक बेटी हो, तुम एक पत्नी हो, तुम एक माता हो और सबसे बढकर तुम एक क्षत्राणी हो। इन सभी रूपों में हमारे क्या कर्तव्य हैं, उसका पाठ हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ पढ़ाता है। अपने स्वधर्म का पालन करते हुए संपूर्ण मानवता की सेवा की बात संघ करता है। परिवार में, समाज में अपनी सभी भूमिकाओं को संपूर्ण निष्ठा से निभाते हुए हम अपने कर्तव्य का पालन करें तभी हम समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम होंगे। संघ हमें बताता है कि नारी के रूप में हमारा दायित्व अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि माँ के रूप में नारी ही भावी पीढ़ी की निर्माता होती है। वह अपनी संतान को उच्च कोटि के संस्कार देती है, तभी उसकी माता की भूमिका सार्थक होती है। क्षत्रिय माता के रूप में हमारा कर्तव्य है कि हम जन्म से ही अपनी संतान को क्षत्रियोचित संस्कारों से संस्कारित करके उसे एक आदर्श क्षत्रिय बनाएँ, महामानव बनाएँ, युगपुरुष बनाएँ, यह शिक्षण क्षत्रिय युवक संघ की पाठशाला में दिया जाता है। अब हमें तय करना है कि ऐसी पाठशाला में जाने से कहीं हम चूक नहीं जाएँ। इसलिए आप स्वयं भी संघ के शिविरों व शाखाओं में आवें व अपने बच्चों को भी भेजें। ●

भवानी निकेतन के अध्यक्ष श्री शिवपालसिंह नांगल

मंचस्थ राजनीतिज्ञ, नेतागण, प्रतिष्ठित लोग, सामाजिक संगठनों व संस्थाओं से जुड़े हुये लोगों का सम्मान। राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे हिन्दुस्तान और विश्व के कोन-कोने से क्षात्रधर्म का पालन करने वाले मेरे सभी बन्धु-भाइयों और बहनों आज का दिन हम सबके लिये सौभाग्य का दिन है ओर विशेषकर भवानी निकेतन प्रांगण और उसके संचालक मंडल परिवार के लिए बहुत-बहुत सौभाग्य की और बहुत प्रसन्नता की बात है कि आज लाखों की संख्या में इस पवित्र भूमि पर आपका पदार्पण हुआ। मैं आपका बहुत-बहुत हार्दिक अभिनंदन करता हूँ और भवानी निकेतन परिवार को वर्तमान स्वरूप में सर्वाधिक योगदान देने वाले परम आदरणीय जालमसिंहजी आसपुरा को भी नमन करता हूँ और निवेदन करता हूँ कि ये जो भावना आ रही है कि राजपूत (क्षत्रिय) का राज कभी था, आज ऐसी स्थित नहीं है। जिस भाई के मन में भी यह विचार आये वो दायां औरा बायां देखकर के गर्व महसूस करे कि वो अकेला नहीं है उसके साथ में लाखों क्षत्रिय और क्षत्राणियाँ केसरिया करने को तैयार है। हमारे पास में केन्द्र में राज्यवर्धनसिंह व गजेन्द्रसिंह शेखावत जैसे नेता हैं तो राजस्थान के क्षेत्र मण्डल में सात बार के विधायक रहे श्री राजेन्द्र राठौड़, प्रगल्भ, संघर्षशील व्यक्तित्व और उदीयमान धर्मेन्द्र राठौड़ जैसे नेताओं की कोई कमी नहीं है।

क्षत्रिय संस्थानों में भी भवानी निकेतन के साथ ही भोपाल नोबल उदयपुर, चौपासनी जोधपुर और किसी क्षेत्र में कोई कमी नहीं है आवश्यकता है तो केवल हुंकार भरने की और महसूस करने की है कि ईश्वर ने हमको क्षत्रिय कुल में जन्म दिया है और हम इसलिए पैदा हुए हैं और हम सब ये अगर विचार करेंगे तो माँ भगवती की कृपा से आपके सारे काम श्रेष्ठ होंगे। एक बार पुनः आपका अभिनन्दन व हार्दिक स्वागत करते हुए धन्यवाद। ●

गतांक से आगे

पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

बचपन के उन बाल सुलभ पवित्र दिनों में पूज्य श्री तनसिंहजी ने समझना सीखा ही था कि समाज की गरिमा का दर्शन हुआ। समाज की गरिमा का महत्त्व उनमें इस कदर जमकर बैठ गया कि प्रयत्न करने पर भी उनके दिल दिमाग से निकाला नहीं जा सका। समाज से उनका गहरा लगाव व अन्तरंग सम्बन्ध था, जिसका प्रकटीकरण समाज को सम्बोधित करते हुए उन्होंने इस तरह किया, उन्हीं की जुबान से –

''तुम मेरी क्रीड़ा स्थली के मनोरम क्षेत्र ही नहीं, मेरी प्रेरणा के केन्द्र और मेरी धमनियों के पवित्र और उष्ण रक्त हो, तेरा सम्मान ही मेरी लज्जा है, तेरा गुणगान ही मेरा अनुपम पेय है, जिसे पीकर मैं शहंशाह बना फिरता हूँ। आज मेरे जीवन में कोई धन नहीं रहा, केवल तेरे जीवन का धन ही मेरे जीवन का धन है। तेरा यह गौरवपूर्ण इतिहास ही मेरी खुराक है, जिसे खाकर मेरा जीवन स्पन्दित होता है। मेरा संपूर्ण जीवन जिस दिशा की ओर जा रहा है, उस दिशा में तुम अन्तिम दिग्गज हो। जब तू मुस्कराता है, तो मेरी कुटिया में दिवाली जगमगा उठती है। तू जब कराहता है, तो मेरे सर्वस्व की होली धधक उठती है। तू क्रोधित होता है, तब मेरी दुनिया पर बिजलियाँ कड़क उठती हैं। तेरा आनन्द मेरी बसन्त ऋतु है। तेरा प्यार मेरे जीवन की हरियाली है। तेरी निराशा मेरे सपनों पर गुजरने वाला बर्फीला तूफान है। तुम समुद्र और मैं तुम्हारी ओर उछलता आने वाला एक नाला हूँ। तुर मेरे सर्वस्व हो और मैं तुम्हारे चरणों की कृपा का निष्काम उपासक हूँ।''

समाज के प्रति पूज्य श्री तनसिंहजी का ऐसा था अनन्यता का भाव व ध्येय निष्ठा। वही समाज जब पथ विचलित और धर्म विमुख होकर हेय अवस्था को प्राप्त हो गया तो पूज्य श्री तनसिंहजी ने आगे कहा–''तुम्हारी हेय अवस्था को भी मैं श्रद्धा से ही देखा करता हूँ। तेरी व्यथा ही मेरी आँखों के बहुमूल्य आँसू हैं।''

पूज्य श्री तनसिंहजी बिखरे हुए अपने समाज को एकजुट देखना चाहते थे, इसलिए पूज्य श्री ने अपने समाज की बिखरी हुई ईंटों से भव्य ईमारत बनाने की ठान समाज जागरण का बीड़ा उठाया। पूज्य श्री ने समाज जागरण का काम शुरू किया तो उनके काम में कई लोग सहयोगी बनकर साथ हो गये। कारवाँ चल पड़ा। इस कारवाँ में पूज्य श्री के साथ जो लोग जुड़े, उनको पूज्य श्री ने दो श्रेणी में विभक्त किया–पहली पीढी और दूसरी पीढी। इस सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंहजी ने जो कहा, उन्हीं की जुबानी से–

''मेरे जीवन पर जो लोग छाए हुए हैं, उनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने अपनी बौद्धिक शक्ति और कार्यक्षमता के कारण मुझे उनके प्रति समर्पित होने को विवश किया है। यह विवशता उन परिस्थितियों का परिणाम थी जो मुझे अपने किये हुए कार्यों का फल अपनी आँखों से दिखाना चाहती थी। मेरी फलासक्ति ने ही ऐसी पीढी का निर्माण किया था, इसलिए वे भी वास्तव में मेरी ही कृति थे, किन्तु मैं और वे सभी यही मानते थे कि वे कृति नहीं, सृष्टा ही हैं। इस प्रकार की पीढी के जो पुछल्ले थे वे भी उसी पीढी के गुणों–अवगुणों के परिणाम थे। उनके प्रति समर्पित होने में भी मेरा वही भाव था, फल की आसक्ति। मैं चाहता था कि कुछ परिणाम हमारे कार्य के निकले और उन परिणामों के लिए ही जो परिस्थितियाँ आवश्यक हैं, उनकी विवशता ने ही मुझे उनके प्रति समर्पित होने को बाध्य किया। ऐसी एक लम्बी पीढी बनती गई किन्तु जो शनैः शनैः निकम्मे होते हुए, मेरी आँखों से गिरते

गए, क्योंकि उनकी जीवनधारा ही कुछ विशिष्ट क्रियाओं के स्रोत से शुरू होती थी और उन क्रियाओं के अभाव में उनकी मूल उपयोगिता नष्ट हो गई किन्तु उनकी पीढी में आज भी कुछ शेष हैं, जिनके प्रति आकर्षण का आज भी वही कारण है कि मैं कार्य के परिणामों के गाम्भीर्य से भयभीत हूँ। उन लोगों के प्रति मेरा सम्मान भय से उत्पन्न होने वाला है, सहज रूप में कृतज्ञता की भावना से नहीं। ज्योंहि मैं परिणामों के भय से मुक्त हुआ और समझो त्योंहि मैं उनकी दासता से मुक्त हो जाऊँगा। यह पीढी मेरी निर्बलता की उपज है और वह निर्बलता का ही सृजन करती है। दिखाई देने से ऐसी पीढी तेजस्वी, उग्र और कर्मठ दिखाई देती है, किन्तु उनकी आन्तरिक निर्बलता होने के कारण वइ सब उग्रता एक विचार के लिए बहुरूपिये की सी अभिनय-कला ही दिखाई देती है।

''किन्तु तुम इस पहली पीढी में नहीं थे। तुमने भी मुझे समर्पित होने के लिए विवश किया, किन्तु तुमने मेरी आज्ञा का यथारूप पालन कर, मेरा दुख-दर्द उठाया। चाहे तुम कितने ही जड़-मूर्ख और लोगों की निगाह में निठल्ले दिखाई देते हो, किन्तु तुम्हारे प्रति मेरी आस्था का कारण था, तुम्हारा आज्ञाकारी स्वरूप। मेरी आज्ञा पालन कर तुम भिखारी (मेरे जैसे) बने और भिखारी के (मेरे) सभी कष्ट सहे, इसलिए सहज रूप से मेरी तुम्हारे प्रति कृतज्ञता ने ही मुझे समर्पित होने को विवश किया। पहली पीढ़ी की हुकूमत विवशता की हुकूमत थी और तुमने भी मुझ पर हुकूमत की किन्तु वह हुकूमत तुमने मेरा दास बनकर मुझ पर की इसीलिए तुम्हारी हुकूमत विवशता की नहीं प्रेम की हुकूमत थी।

''कुछ लोग कह सकते हैं, कि इसका अभिप्राय यह है कि तुम्हें वही प्रिय लगते हैं तो तुम्हारी बात को ब्रह्म वाक्य मान लें। तुमने कहा उसी को अन्तिम और एकमात्र सत्य मान ले, पर यह भी एक मिथ्या आरोप है। क्या तुमने मुझसे कभी तर्क नहीं किये? क्या तुमने कभी समझने के लिए प्रश्न नहीं पूछे? तुम जब प्रश्न पूछने में डटे हुए थे, तब वह पहली पीढी मुझ पर आरोपों की झड़ी लगाकर गालियाँ दे रही थी। तुमने तो प्रश्न पूछे दिल से पूछे, समस्या को समझने के दृष्टिकोण से पूछे और मैंने अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को निचोड़कर उनके उत्तर दिये। तर्कों को तर्कों द्वारा संतुष्ट किया और तुम संतुष्ट हो गये। कदाचित न भी हुए तो तुमने फिर प्रश्नों को पूछा, भिन्न-भिन्न तरीकों से पूछा, समय-समय पर नवीन तर्क खड़े किये और मैं उन सबका प्रसन्नता से उत्तर देता गया क्योंकि तुम समझने के दृष्टिकोण से प्रश्न पूछा करते थे, जबकि वह पीढी समझने के पहले ही अपने निर्णयों की घोषणा कर देती थी। मुझे अफसोस इसी बात का है कि वह अपने निर्णय में तर्क से संतुष्ट होने के रास्ते बन्द करके अपने निर्णयों को बरबस लादना चाहते थे। वे मुझे प्रिय हैं जो अयोग्य होते हुए भी योग्यता प्राप्त करने के इच्छुक हैं, किन्तु उनके लिए मैं क्या कहूँ, जिनके पास योग्यता का केवल दम्भ है और उस दम्भ के प्रति न किसी तर्क को सुनना चाहते और न सुनाना पसन्द करते। मैं स्वयं चाहता हूँ, तर्क-बुद्धि द्वारा मैं संतुष्ट होऊं, लेकिन किसी के दम्भ के प्रति मैं संतुष्ट होता हूँ, तो वह मेरी परिस्थितियों के प्रति दासता है जो न मेरे लिए और न उनके लिए ही हितकारी है।''

पूज्य श्री तनसिंहजी ने अपनी एक पीढी को आदर्श कृति कहकर सम्बोधित किया-

''मेरी आदर्श कृति! तुमने संसार की कोलाहलपूर्ण भीड़ में से निकल कर मुझे व्यक्तित्व प्रदान किया है। मैं आज जो कुछ भी हूँ, तुम्हारे ही दान की सजीव कृतज्ञता हूँ, किन्तु उस पीढ़ी ने असंख्य व्यक्तियों को भीड़ बना दिया। उन्होंने एक ही लाठी से सबको हाँकना शुरू कर दिया। केवल इस नाम पर कि यह समय का तकाजा है और समाज की आवश्यकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि भीड़ में से जब तुमने मुझे व्यक्ति बनाया तो यह निर्माण अनदेखा ही चला गया किन्तु उन्होंने जब व्यक्तियों की भीड़ बनाई तो वह भीड़ वाह-वाह के शोर से पागल हो

गई। आश्चर्य चकित हर्ष नाद से बाहरी हो गई और अन्ततोगत्वा वह सारी भीड़ पश्चिमी अधिनायकवाद की कठपुतिलयों की भाँति केवल यंत्र सामग्री बनने लगी। वे सृष्टा हुए और उनके शासित केवल यंत्र। शासित तो मैं भी तुम्हारा हूँ, किन्तु मैं भीड़ नहीं, एक सामान्य नहीं विशिष्ट हो गया हूँ। दुःख इस बात का है तुम चले गए, इस दुनिया से उठ गए और तुम्हारे उठने के साथ तुम्हारी अमर हुकूमत मेरे मानस पटल पर अमर शासन कर रही है। मुझे शिक्षा दे रही है कि किसी शासन का प्रारम्भ उसके शासित होने से ही हो सकता है। दूसरी ओर वे लोग इस दुनिया में हैं, पर हमारी भाषा में वे आज मृत हैं। उनकी मृत्यु के साथ हमारे ऊपर जो भी उनकी हुकूमत थी वह भी उठ गई। प्रेम तो उन्होंने दिया ही नहीं था, वे तो अपनी कार्य-दक्षता के कारण शासक बने और शासक बनने के साथ उन्होंने अपने शासन को समाप्त कर दिया।

''दोनों ही आज मेरे सामने नहीं हैं। पर तुम न होकर भी मेरे सामने सदैव हो और वे सामने होकर भी आज मेरे नहीं हैं। तुम दोनों की पीढियाँ आज मेरे सामने हैं। तुम्हारा वंश आज भी मुझ पर प्रेम से हुकूमत करता है और उसका वंश मुझ पर अपना शासन लादता है और बदले में मेरी नफरत को ले जाता है। तर्क भाष्कर होकर भी यह पूछते हैं कि उनके प्रेम समुद्र में यह नफरत का नाला कहाँ से आ रहा है। पर वास्तव में उनका प्रेम सागर तर्क के दृष्टिकोण से सही है, क्योंकि वह वही सागर है जिसे वे अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखते हैं। तुम्हीं बताओ क्या मृगतृष्णा आँखों से नहीं देखी जाती, पर प्रत्यक्ष भी भ्रम हो सकता है, यह उन्हें मालूम नहीं। यथार्थता यह है कि उनका सागर उनकी आँखों की सृष्टि है, हृदय की नहीं और जो नफरत का नाला आ रहा है वह यद्यपि मेरी ओर से बह रहा है, किन्तु उसका उद्‌गम मेरी शासित अवस्था से निकल रहा है, जो वस्तुत: उन्हीं की देन है।

''तुम्हारी स्मृति को मैं कायम रखना चाहता हूँ क्योंकि उसी से अभियोगों और उलाहनाओं को शान्ति मिलती है। लेकिन उनकी स्मृति को भुला देना चाहता हूँ, क्योंकि वह अभियोगों और उलाहनाओं की स्मृति को उत्तेजित करती है। इसीलिए तो मैं कहता हूँ, यदि तुम काठ के ही थे, तो उन्हीं के जोड़ से मेरे हाथ बने और वे मेरे हाथ ही थे, तो उन्हें काटकर मुक्ति चाहता हूँ किन्तु ऐसे उदण्ड और शोषक हाथों के भरोसे मैं उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना असम्भव मानता हूँ।

''वे क्रान्ति पैदा कर गए और तुम शान्ति दे गए। उन्होंने अपनी पीढी को विद्रोह और बगावत करना सिखाया और तुमने अपनी पीढी को दास बनाकर मुझे गम खाना सिखा दिया। उनके विद्रोह और बगावत जारी हैं और तुम्हारी दासता मुझे अब भी दास बनाये हुए है। लेकिन तुम्हारी दासता बौद्धिक दासता नहीं है और उनकी बौद्धिक दासता का नारा किसी को कुछ बना नहीं सकता, वह तो कुछ ढहाता ही है। ऐसी क्रान्ति पहले के स्वरूप को अवश्य मिटाती है किन्तु कोई विकल्प पैदा नहीं करती।

''मेरे जीवन में जब कभी कठिनाइयाँ और परेशानियाँ पैदा होती हैं तो मैं उस पीढी से और भी अधिक परेशान होता हूँ, क्योंकि उन्होंने एक ऐसी निर्बल पीढी का निर्माण किया है, जो किसी भी आदमी के लिए भार ही रहेगी, पर ऐसी किसी परेशानियों में मुझे तुम्हारी और तुम्हारी पीढी की याद आती है, क्योंकि तुम्हीं ने मुझे कठिनाइयों और परेशानियों में मुस्कराना सिखाया। मैं जब कभी गुस्से में होता हूँ, तो उनकी पीढी भयभीत दिखाई देती है, क्योंकि उनके पास केवल भय ही है जो लोगों में बाँटने के बाद शेष रहे हुए भण्डार को अपने भीतर संजोये रखते हैं। किन्तु तुम्हारी पीढी मेरे क्रोधित होने पर प्रेम और व्यंग्य से मुस्कराती है, जैसे कह रही हो-'बस! तुम्हारी सहन शक्ति अभी तक इतनी है?' ऐसी मुस्कराहट की कल्पना करते ही मेरा क्रोध काफूर हो जाता है।

''जिन्होंने तुम्हें देखा है वे तुम्हें कभी भूल नहीं सकते। तुमने अपनी सीमाएँ निश्चित कर ली थी और वे

(शेष पृष्ठ 31 पर)

गतांक से आगे

इतिहास के झरोखे में गोगा चौहान

– मातुसिंह मानपुरा

ददरेवा में चौहानों द्वारा निर्मित गढ :– आज तक किसी भी इतिहासकार ने चौहानों द्वारा निर्मित ददरेवा गढ के विवरण हेतु कलम नहीं उठाई है। लोककथाओं में इसके सम्बन्ध में अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण अवश्य मिलता है जो आज तक भ्रमित किये हुये है और युक्तिसंगत भी नहीं है। ऐतिहासिक तथ्यों एवं उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रथम चौहान शासक राणा जेवर के समय गाँव के मध्य ऊँचे भू-भाग पर गढ का निर्माण प्रारम्भ हो गया था। यह स्थान पृथ्वीराजोतों (राठौड़ों) द्वारा निर्मित वर्तमान गढ के पूर्व तथा गोगा मन्दिर (मेड़ी) के मध्य स्थित है, इस समय गढ अस्तित्व में नहीं है। राणा जेवर के समय राजपरिवार के निवास स्थान एवं सामरिक महत्त्व के आवश्यक संसाधनों के लिये अस्थाई परकोटे का निर्माण किया गया था जिसका मुख्य द्वार पूर्व दिशा की तरफ था। राणा गोगा के समय तक आवश्यक निर्माण तो हुआ लेकिन लोककथाओं में जो विवरण है वह सत्य से कहीं दूर है क्योंकि राणा जेवर एवं राणा गोगा के अल्प समय के राज्यकाल में तत्कालीन समय के संसाधनों के द्वारा अधिक निर्माण सम्भव नहीं था। राणा उदयराज के समय सीमांकन किये हुये गढ के आगे जुझार गोगाजी का चबूतरा निर्मित हुआ, पूजा-अर्चना के बढने व जनसामान्य के कष्ट दूर होने पर एक छोटी मेड़ी (मंदिर) का निर्माण उसी स्थान पर जालों (जाल वृक्ष) के बीच किया गया। उदयराज से लेकर राणा मोटेराय तक ददरेवा पर किसी बाहरी शक्ति ने आक्रमण करने का साहस नहीं किया। यह गढ निर्माण कार्य का स्वर्णिम काल था जो तत्कालीन आवश्यकतानुसार निर्मित किया गया। दिल्ली के शासक फिरोजशाह तुगलक के समय हिसार के फौजदार सैय्यद नासिर द्वारा ददरेवा पर आक्रमण किया गया। उस समय चौहान आक्रमण की सम्भावना से अनभिज्ञ थे इसलिये परास्त हुये। राणा मोटेराय के पुत्रों (3-4) ने कूटनीति एवं दबावपूर्ण स्थिति में इस्लाम धर्म स्वीकार किया, जिसके सम्बन्ध में अलग-अलग मत हैं। कटु अनुभव प्राप्त चौहान शासकों ने गढ एवं सामरिक स्थिति को मजबूत किया। विक्रम की 16वीं शताब्दी के मध्य तक किसी भी बाहरी शक्ति ने ददरेवा पर आक्रमण करने का दुसाहस नहीं किया। ददरेवा की सुदृढ सामरिक स्थिति का आंकलन इतिहास के पन्नों में भी दर्ज है, जिसका प्रसंगवश उल्लेख करना उचित है। 'बीकानेर राज्य का इतिहास' के लेखक गोरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा प्रथम भाग में दिये गये उक्त तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं। बीकानेर राज्य की स्थापना के प्रारम्भिक काल में शेखसर-लादड़िया (तह. सरदारशहर) के शासक पांडू गोदारा एवं भाड़ंग (तह. तारानगर) के शासक पुला साहरण के मध्य मलकी प्रकरण को लेकर संघर्ष प्रारम्भ हुआ। पूला साहरण (भाड़ंग) ने नारनोल-भिवानी क्षेत्र के प्रभावशाली शासक नरसी जाटू (तंवर) से पांडू गोदारा (शेखसर-लादड़िया) पर आक्रमण करने के लिये सहायता माँगी। नरसी जाटू बड़ी सेना के साथ पूला साहरण के पक्ष में रवाना हुआ। पांडू गोदारा को जब इसकी सूचना मिली तो वह अपने पुत्र नकोदर के साथ कांधल रणमलोत एवं बीका जोधावत से सहायता के लिये मिला। राठौड़ कांधल-बीका ने पांडू गोदारा के पक्ष में पुला साहरण एवं नरसीं जाटू की संयुक्त सेना पर आक्रमण किया। ददरेवा राज्य की सीमा में से होते हुये लुदी-लुटाणा (तह. राजगढ) के पास सोये हुये शक्तिशाली नरसी जाटू को बीका द्वारा ललकार कर मारा गया लेकिन बीकानेर की सेना ने ददरेवा का अहित करने का विचार नहीं किया। इतिहासकार औझा द्वारा दिया गया दूसरा विवरण भी ददरेवा की सुदृढ सामरिक स्थिति की ओर संकेत करता है।

बीकानेर राज्य के विस्तार के अवसर पर राठौड़ कांधल हिसार के सुबेदार सारंगखां से युद्ध करते हुये काम आये। कांधल के बैर का बदला लेने के लिये जोधपुर-बीकानेर सहित रणमलोतों की संयुक्त शक्ति ने सुरक्षित रूप से छिपे हुये हिसार के सुबेदार सारंगखां को मार कर दिल्ली को चुनौती दी थी लेकिन मार्ग में आये ददरेवा पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया।

बीकानेर के तीसरे शासक राव लूणकरण ने बड़ी सेना के साथ ददरेवा पर आक्रमण किया। राणा मानसिंह ने 500 सैनिकों सहित गढ में अपने आपको सुरक्षित किया। बीकानेर की सेना ने सात माह तक गढ को घेरे रखा लेकिन गढ में प्रवेश नहीं किया जा सका। अन्त में रसद सामग्री की कमी होने के कारण राणा मानसिंह देपालोत ने गढ के दरवाजे खोल कर बीकानेर की सेना से युद्ध किया। बीकानेर राव लूणकरण के भाई राठौड़ घड़सी के हाथ से राणा मानसिंह चौहान मारा गया। बीकानेर सेना की विजय हुयी। युद्ध में जीवित बचे हुये चौहान सैनिकों को काम आये योद्धाओं के अन्तिम संस्कार व गढ से राजपरिवार के सदस्यों को अन्यत्र ले जाने का समय दिया गया। गढ खाली होने के पश्चात बीकानेर की सेना द्वारा लगभग आधे हिस्से को तोड़ दिया गया, आवश्यक सैनिकों को रखकर बीकानेर राज्य का थाना स्थापित किया। चौहानों के गढ के स्थान पर महाजन, ब्राह्मण एवं माली समाज के घर आबाद हैं। पंक्तियों के लेखक ने इस क्षेत्र में बसे परिवारों से सम्पर्क किया तो लगभग सभी ने मकानों की नींव खोदते समय गढ की नींव के पत्थर आने की बात स्पष्ट रूप से स्वीकार की। यह क्षेत्र अब भी आसपास की बस्ती से ऊँचा दिखाई देता है।

वि.सं. 1174 में ठा. सुद्रसैन पृथ्वीराजोत को ददरेवा सहित 12 गाँवों की जागीर दी गयी। चौहानों द्वारा निर्मित गढ का शेष भाग हटाकर इसी गढ के ठीक पश्चिम में नये गढ का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया जो कई चरणों में पूर्ण हुआ। पश्चिम मुखी यह गढ सम्भवत: चौहानों के गढ से छोटा है। सामरिक दृष्टि से बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण न होते हुये भी ददरेवा के 9वें विद्रोही ठाकुर सुरजमल ने बीकानेर शासक के आदेश से आयी अंग्रेजी सेना का मुकाबला किया था। चौहानों द्वारा निर्मित गढ के आगे पूर्व निर्मित स्थान पर (वर्तमान गढ से 250-300 मीटर पूर्व दिशा में) लोकदेवता के नाम से सुविख्यात गोगाजी चौहान की नई मेड़ी (जो वर्तमान में है) का निर्माण बीकानेर महाराजा कुँवर डूंगरसिंह के समय में ठा. हरिसिंह सुरजमलोत ने वि.सं. 1936 आसोज सुदि दूज (17.9.1879) को करवाया जो आज भव्य रूप में सुशोभित है।

लोकदेवता के रूप में गोगाजी चौहान :- आत्मा, देवात्मा, परमात्मा आदि कुछ ऐसे शब्द हैं जिनकी व्याख्या करना सहज कार्य नहीं है। यद्यपि यह मेरा विषय नहीं है लेकिन गोगा चौहान के सम्बन्ध में किये गये लेखन कार्य को पूर्णता एवं व्यक्तिगत रुचि के कारण इसे आंशिक रूप से स्पष्ट करना मेरा दायित्व बन जाता है। तारानगर एवं राजगढ (जिला-चूरू) के विद्वान पंडितों से विस्तृत चर्चा करने के उपरान्त कुछ उपयोगी तथ्य प्राप्त हुये। ज्योतिष दर्शन के अनुसार चन्द्रमा व्यक्ति के मन को प्रभावित करता है। 'चन्द्रमा मनसो जात:।' मन आत्मा का सहयोगी भाव है। ग्रह-नक्षत्रों के रूप में चन्द्रमा और सूर्य उत्साह और तेज प्रदान करते हैं। यदि चन्द्रमा-सूर्य की स्थिति उच्च स्तर की है तो व्यक्ति वांछित लक्ष्य प्राप्त करने हेतु आत्मोत्सर्ग करने तक को तैयार रहता है। ऐसी स्थिति में आत्मा एवं शरीर का विछोह हो जाये तो वह आत्मा देवत्व प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हो जाती है तथा कुल के आराध्य देवों के शक्तिअंश की प्राप्ति से देवगुण युक्त यह आत्मा ब्रह्मा-विष्णु-महेश की भावनाओं के अनुकूल जनकल्याणकारी कार्य करने का धर्म धारण कर लेती है।

क्षत्रिय गुणों को धारण कर जब महमूद का रास्ता रोक कर आक्रमण किया गया उस समय गोगाजी के चन्द्र-सूर्य की स्थिति उच्च स्तर पर थी क्योंकि इस योग के बिना किसी योद्धा में इतने साहस का संचार नहीं होता। गोगाजी युद्ध मैदान में जब बढ-बढकर प्रहार कर रहे थे और यवन सेना के प्रहार शरीर पर सह रहे थे,

उस समय उनकी आत्मा एवं शरीर का बिछोह हुआ। युद्ध के कुछ समय बाद कुल देवताओं की शक्ति ने आत्मा की रुचि की प्राथमिकता के अनुसार अपने आयुध सहित शक्ति प्रदान की, जिसमें सर्पो के विषहरण की शक्ति प्रमुख थी। आत्मा द्वारा सर्पों का स्वरूप धारण करना तथा विष समन करने की शक्ति कई देवताओं के पास है। यह नये देव गोगाजी को प्राप्त हुयी। लोककथाओं में सत्य से हटकर भ्रमित करने वाले कथानक तैयार किये गये, यथा- गोरखनाथ द्वारा पाताल-लोक जाकर नागशिशु को ले आना, बाछल को वरदान देना, विवाह से पहले गोगा द्वारा नागरूप धारण करना, आदि अनेक कथाओं का सृजन किया गया। अंधविश्वास का नाम लेकर, भारतीय संस्कृति के मूल तत्व को न समझने वाले तथाकथित इतिहासकारों ने नागवंश से सम्बन्ध बताकर तथा अनेक तर्कों द्वारा विषहरण की शक्ति को अंधविश्वास बताकर अलौकिक तथ्यों को लौकिक मानकर तर्क पर कसने का प्रयास किया। यह गोगाजी के इतिहास को जानने का सही तरीका नहीं है। भय पैदा करने, भय दूर करने एवं विषहरण की शक्ति कितनी थी, कब तक थी, किन परिस्थितियों में थी, सही पात्र कौन होता था आदि, अलौकिक बातों का मापक हमारे पास नहीं है। इस योग्यता के बिना सही गलत का निर्णय देना सही नहीं है लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि गोगाजी में विषहरण की शक्ति रही होगी तभी तो जुझार गोगाजी से लोकदेवता गोगाजी हुये हैं। शताब्दियों तक जनसामान्य का आराध्यदेव होने का मतलब है अलौकिक शक्ति सम्पन्न होना। सांसारिक जीवन एवं सांसारिक जीवन के बाद को परखने के तथ्य अलग-अलग होते हैं। लोकिक और अलौकिक कृत्यों को बराबर मानकर परखने के कारण ही इस स्वधर्मी राष्ट्रप्रेमी ददरेवा राणा का इतिहास लेखन अप्रमाणित रहा, जिसके लिए यह वीर पुरुष और उनकी देवात्मा नहीं हमारा आंकलन करने का तरीका जिम्मेवार है।

'जाहर पीर' शब्द के सम्बन्ध में भ्रामक तथ्यों का निस्तारण :- भारतीय संस्कृति उदार रही है। विश्व की किसी भी भाषा का शब्द यहाँ त्याज्य नहीं रहा लेकिन इन शब्दों को तोड़-मरोड़ कर अर्थ का अनर्थ बनाकर प्रस्तुत करने की विचारधारा त्याज्य है। युद्ध करते समय जूझकर (संघर्ष कर) प्राण त्यागने वाले व्यक्ति के नाम और उसकी देवात्मा को जुझार कहते हैं। मरुभूमि (राजस्थान) के लिये यह शब्द नया नहीं है। यहाँ लगभग प्रत्येक गाँव या आसपास के क्षेत्र में स्थापित भोमियों एवं जुझारों की देवलियां लौकिक एवं अलौकिक इतिहास की साक्षी रही हैं। 'जुझार' शब्द अपने आपमें प्रभावोत्पादक है। यहाँ जुझार बनने के अवसर ढूंढने वालों की परम्परा रही है। किसी वीर रस के कवि ने कहा है -

सुण सूरा भूंडण कहै, भाज्यां कुळ लाजंत।
इण धरती रा ऊपन्यां, तीतर नह भाजंत।।

सखी! अमीणो साहिबो, बांकम सूं भरियोह।
रण बिकसै रितुराज ज्यूं, तरवर नित हरियोह।।

गोगाजी के युद्ध मैदान में काम आने के कुछ समय बाद हवन-पूजन उपरान्त इन्हें जुझार के रूप में पूजा जाने लगा। जुझार गोगाजी, वीर जुझार जी, वीर गोगाजी जुझार आदि नामों से भक्तों एवं आमजन द्वारा सम्बोधित किया जाता था। इनमें से वीर जुझार एवं जुझार वीर लोक जुबान पर अधिक प्रचलन में रहे। भय मिश्रित भक्ति के प्रभाव के कारण सभी जाति धर्म के लोग प्रारम्भ से ही जुझार गोगाजी की पूजा-अर्चना करते रहे हैं। 'गुगो बड़ो कै गुसांई' कहावत के भावार्थ ने धर्मों की संकुचित सीमा को हटा दिया। सम्भवत: विक्रम की 14वीं शताब्दी के अन्त तक गोगाजी को 'जुझार जी, जुझार वीर' के नाम से ही याद किया जाता था। कुछ लोककथाओं व लेखकों ने जमीन में दरार आने पर समाधि लेना, माता के बोल पर घर छोड़ना, अन्तिम समय में इस्लाम धर्म स्वीकार करना आदि कुतथ्य इस स्वाभिमानी वीर की कहानी के साथ जोड़ने का प्रयास किया है लेकिन उक्त मिथ्या धारणाओं का खंडन करने वालों ने भी समय-समय पर कलम उठाई है। पं. झाबरमल शर्मा ने लिखा है 'जाहिर का अर्थ तो 'प्रकट या प्रकाश्य' है। किन्तु यहाँ जाहिर पीर का मतलब जौहर या जुझार मालूम होता

है।' 'गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा' के लेखक श्री चन्द्रदान चारण ने अपनी पुस्तक में लिखा है, 'जिस व्यक्ति ने विशाल म्लेच्छ वाहिनी से अपने देश और धर्म की रक्षा करते हुए बड़ी वीरतापूर्वक प्राण त्यागे उसके लिए ऐसी कल्पना करना भी अशोभनीय है।' शोधपत्रिका, भाग-1, अंक-3 के एक आलेख में पं. झाबरमल शर्मा ने गूगा की कलमा पढकर मुसलमान हो जाने की बात को मन-घड़न्त और काल्पनिक माना है।

जुझार गोगाजी सर्वसमाज के देवता के रूप में पूज्य व प्रतिष्ठित हुये। विक्रम की 15वीं शताब्दी के सम्भवत: मध्य में सर्पों से रक्षा करने वाले जुझार गोगा वीर को गोगा पीर, जुझार पीर एवं जाहर पीर कहा जाने लगा। जिसमें गोगा चौहान के वंशज 'क्यामखानी' समाज की विशेष भावनात्मक प्रतिक्रिया रही। इन्होंने गर्व के साथ गोगा पीर को कुल देवता के रूप में पूजा, जिसके कारण जुझार वीर की तरह जुझार पीर, जाहर पीर लोक प्रचलन में हुआ। हिन्दू समाज में मनोबल बढाने के लिए बौद्धिक वर्ग में भक्ति आन्दोलन का चिन्तन प्रभावी हुआ एवं सांस्कृतिक बदलाव के कारण इस्लाम धर्म की तरह पाँच प्रभावशाली हिन्दू पीरों की परिकल्पना का सृजन हुआ तथा इनकी अलौकिक शक्ति को अन्य धर्म के पीरों से श्रेष्ठ बताकर लोक-कथाएँ बनी। मरुभूमि के कवि द्वारा सम्भवत: विक्रम की 16वीं शताब्दी में रचित ये पंक्तियाँ उपर्युक्त तथ्यों को प्रमाणित कर रही है -

पाबू हड़बू रामदे, मांगलिया मेहा।
पांचों पीर पधारज्यो, गोगाजी जेहा।।

रामस्या पीर, गोगा पीर जैसे लोकसंस्कृति के गढे (बनाये) हुये सम्बोधनों को कुतर्कों से काटना उचित नहीं लगता। गोगा चौहान का यशस्वी कार्य लोककथाओं के विमान में बैठकर उत्तर एवं मध्य भारत के अतिरिक्त सुदूर दक्षिण तक पहुँचा लेकिन इस गौरवशाली यश यात्रा में इतिहास के कुछ तथ्य कहीं छूट गये तो हमें इसका अर्थ यह नहीं लगाना चाहिये कि उस स्वाभिमानी योद्धा ने धर्म को त्याग दिया था। जुझार से लोकदेवता के रूप में प्रतिष्ठित वीरों के नामों में सम्बोधन एवं पूजा स्थलों की बनावट में बदलाव आना प्रकृति का शाश्वत नियम है। गोगा चौहान एक राष्ट्रवादी स्वाभिमानी वीर एवं लौकिक तथा अलौकिक कृत्यों के सर्वश्रेष्ठ राणा व लोकदेवता का यशस्वी चरित्र आमजन के कष्ट दूर करने एवं मनोबल बढाने में सहयोगी रहा है।

गोगाजी की पूजा भाद्रपद की कृष्ण व शुक्ल पक्ष की नवमीं को होती है। पूर्वी क्षेत्र के समर्पित सैनिकभक्त (पूर्बिया) श्रावण शुक्ला सप्तमी एवं भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को पूजा-अर्चना करना अच्छा मानते हैं, ये लोग शीश मैड़ी (ददरेवा) के बाद धुरमैड़ी (गोगामैड़ी) भी जाते हैं। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश के कुछ भक्त निशान के साथ गले में सर्प डालकर भी मेले में आते हैं। डैरुं पर जागरण लगाये जाते हैं, इस अवसर व मैड़ी में धोक देने आते समय कुछ भक्त लोहे की बनी जंजीरों के गुच्छे को सिर में मारकर नाचते हैं, इसे 'छायां' आना कहते हैं। साधारणतया गोगाजी को खीर-चूरमां व पूड़ी (अठांई) तथा नारियल का भोग लगाया जाता है। कृषक हल जोतने के प्रथम दिन गोगाजी के नाम की 'राखी' हल को बाँधकर रक्षा करने का निवेदन करते हैं। महिलाएँ श्रावण एवं भाद्रपद में दिन-रात्रि में अवसर मिलने पर 'पीपळी लोकगीत' की तर्ज पर गोगाजी के गीत गाती हैं। संसार में आकर अपने पदचिन्हों की छाप को स्थापित करने वाले वीरों के लिए किसी पारखी कवि ने कहा है-

कोट खिसै देवळ डिगै, बिरछ इंधण हो जाय।
जस रा आखर जोइया, जातां जुगां न जाय।।

●

दूसरों से अच्छा कहलाने की इच्छा बहुत बड़ी निर्बलता है। इसलिये अच्छे बनो, अच्छे कहलाओ मत।

- स्वामी श्री रामसुखदास जी

गतांक से आगे

पृथ्वीराज चौहान (तृतीय)

– विरेन्द्रसिंह मांडण (किनसरिया)

पृथ्वीराज चौहान–इतिहास की धुंध पर एक प्रकाश :
पृथ्वीराज पर ऐतिहासिक स्रोत, भाग–4

हम्मीर महाकाव्य :

नयचन्द्र सूरि कृत ये 1403 ई. का संस्कृत काव्य चौहान इतिहास के लिए बहुमूल्य है। इसकी सूचना ऐतिह्य दृष्टि से सटीकता में पृथ्वीराजविजय से थोड़ी ही नीचे आंकी गयी है। जयानक तो चौहान राजसभा के कवि थे पर सूरि जी किसी चौहान राज्य पर आश्रित नहीं थे। इस कारण पृथ्वीराजविजय में व्याप्त पृथ्वीराज व अन्य चौपाल राजाओं के अतिशयोक्तिपूर्ण महिमामंडन की प्रवृत्ति सूरि जी के लेखन में नहीं दिखती। ऐतिहासिक व्यक्तियों को देवत्व प्रदान करने के प्रयासों का अभाव विद्यार्थियों के लिए वरदान की भाँति इतिहास पर दृष्टि उज्ज्वल करता है अतएव यहाँ हमारे उद्देश्य के लिए बहुत उपयुक्त है। एक अच्छी बात ये भी है कि हम्मीर महाकाव्य की प्रतियाँ पृथ्वीराजविजय जैसी अपूर्ण या क्षत–विक्षत नहीं है।

इस काव्य का जन्म तत्कालीन ग्वालियर के तोमर राज्य द्वारा प्रेषित एक साहित्यिक चुनौती के उत्तर रूप में हुआ था। हम्मीर महाकाव्य चौहानों की रणथंभौर शाखा, अर्थात् पृथ्वीराज के पुत्र गोविन्दराज से लेकर महानायक हम्मीरदेव चौहान तक के शासनकाल का सर्वोत्तम ऐतिहासिक स्रोत है।

जैन ग्रन्थ :

गुजरात का चौलुक्य राज्य अधिकतर समय अजमेर के चौहानों का एक प्रतिद्वंद्वी पड़ौसी रहा है। गुजरात व दक्षिणी राजस्थान के क्षेत्र इस चौलुक्य राज्य के प्रभाव में थे। चौलुक्य राजाओं द्वारा प्रोत्साहन व संरक्षण से ये क्षेत्र जैन धर्म के दृढ केन्द्र बन गए।

जैन ग्रंथों का एक बड़ा भाग जिसे सिंघी जैन ग्रंथमाला के तत्वावधान में समय–समय पर प्रकाशित किया गया व हमने आगे उद्धृत किया है, उसे स्वाभाविक कारणों से चौलुक्य समर्थक पाया जाता है। जैसे प्रबंधचिंतामणि, प्रबन्धकोष, पुरातन–प्रबंध–संग्रह आदि।

इन ग्रन्थों में राजनैतिक समीकरणों का प्रभाव अजमेर के चौहानों व अनंगपाल द्वितीय को छोड़ दिल्ली के तोमरों के प्रति भी आलोचनात्मक रुझान से स्पष्ट हो जाता है। जैन मठों की पट्टावलियों व गुर्वावलियाँ भी बहुत उपयोगी हैं। जैन मठों को गच्छ कहा जाता है। मठाधीशों की यात्राओं व गतिविधियों पर केन्द्रित होने के कारण इनमें तब की भूराजनैतिक परिस्थिति पर बहुमल्य सूचना मिलती है। हमारे संदर्भ के लिए खरतरगच्छ पट्टावली और खरतरगच्छ गुर्वावलि का उपयोग करेंगे। यहाँ हमारे लिये प्रासंगिक जैन ग्रंथों में ऐतिहासिक दृष्टि से सबसे विवादास्पद है पृथ्वीराज प्रबंध जो कि जयचंद्र प्रबंध की भाँति पुरातन प्रबंध संग्रह में संकलित है। पृथ्वीराज प्रबंध ने चौहान प्रशासन में एक या दो नहीं, अपितु तीन–तीन विद्रोही भेदिये बता दिए हैं।

जिस प्रकार पृथ्वीराज रासो ने पृथ्वीराज चौहान के गुणगान में इतिहास के चीथड़े उड़ाए, वैसे ही कुछ जैन ग्रंथों ने पृथ्वीराज की आलोचना करते–करते उन्हें निकम्मा और व्यभिचारी बना दिया। जैन लेखकों का अपना पूर्वाग्रह तब भी आड़े आता है जब वो सोमेश्वर चौहान और यशोधवल की उपलब्धियों पर पर्दा डालते हैं। उदाहरण–कुमारपाल चौलुक्य के काल में हुए एक युद्ध में चौलुक्यों के शत्रु कोंकणपति मल्लिकार्जुन शिलाहार का वध चौलुक्य राजपरिवार के नाती और पृथ्वीराज के पिता सोमेश्वर चौहान ने किया। पर कुमारपाल चरित जैसे जैन ग्रंथों ने श्रेय दे दिया पीछे हारकर आए जैन सेनापति आम्बद को। इस प्रकार दोनों ओर ग्रन्थों के ध्रुवीकरण से परे हटें तो सत्य दोनों से कुछ दूरी लिए बीच में कहीं दबा मिलता है।

आगे जितने भी इन जैन ग्रंथों का उपयोग करेंगे, उनमें अधिकतर 14वीं व 15वीं सदी में रचित हैं पर कुछ उससे पूर्व के भी।

इस्लामी (फारसी) स्रोत :

तज-उल-मासिर, ईरानी मूल के हसन निजामी का समकालीन फारसी ग्रन्थ है। निजामी ने इसे शहाबुद्दीन गोरी की मृत्यु के कई वर्षों पहले ही दिल्ली में लिखना आरम्भ कर दिया था। निजामी की पृष्ठभूमि और उठना-बैठना संभ्रांत वर्ग का लगता है। ऐतिहासिक दृष्टि से इस ग्रंथ की जानकारी में जो समस्याएँ आती हैं, वो लेखक के पूर्वाग्रह और काव्यात्मक अतिशयोक्ति के कारण हैं, तथ्यों के अभाव से नहीं। बाकी स्वाभाविक इस्लामी जुनून तो उस काल के हर फारसी ग्रंथ में पाया ही जाता है।

फुतुहस्सालातीन, अब्दुल मालिक इसामी का 14वीं सदी में लिखा गया ग्रन्थ है। भारत में जन्मे इसामी घटनाओं के 150 वर्ष बाद लिख रहे थे। उनके पूर्वज बगदाद से गोरी की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद ही भारत आ गए थे। जानकारी का अभाव इसामी के पास भी नहीं लगता। पर ऐतिहासिक तथ्यों को छुपाने के लिए उन्होंने कल्पनाओं का सहारा तो लिया ही है। साथ ही चरमपंथी हिन्दू-मुस्लिम ध्रुवीकरण उनकी लेखनी का पसंदीदा विषय रहा है।

तबकात-इ-नासिरी, मिन्हाज-इ-सिराज का ये निकट-कालीन ग्रन्थ 13वीं सदी के मध्य में लिखा गया। सुल्तान इल्तुतमिश के समय भारत आये मिन्हाज शिक्षा, कौशल और शाही संपर्क के मामले में बाकी लेखकों से भी आगे थे। पर तुर्क काल के अन्य फारसी लेखकों की अपेक्षा मिन्हाज की कलम में हिन्दुओं के प्रति घृणा और पूर्वाग्रह सबसे अधिक पाया गया है। इसी कारण मिन्हाज के वर्णन विस्तृत तो बहुत हैं पर उतने ही जहरीले भी हैं।

जवामी-उल-हिकायत, इस निकट-कालीन ग्रन्थ के लेखक हैं मौलाना जहीरुद्दीन नस्र मुहम्मद उफी। रचना काल 1211 ईस्वी यानी गोरी की मृत्यु के मात्र 5 वर्षों बाद। मिन्हाज से वर्षों पहले आये उफी का ग्रन्थ उपयोगी तो बहुत है, पर पृथ्वीराज और गोरी के सम्बन्ध में केवल संक्षेप में बताया गया है।

सार :

अब तक हमने पृथ्वीराज से सम्बन्धित भारतीय ऐतिहासिक ग्रंथों में कुछ का मूल्यांकन किया व उनकी रूपरेखा, रुझान आदि समझे। हमने देखा कि रासो किस प्रकार लिपि व भाषा की एक पहेली रहा है और इसके ऐतिह्य तत्व न्यूनतम हैं। किन ग्रंथों में इतिहास व मिथकों से कहाँ संपर्क है और ये ग्रंथ अपने वर्तमान स्वरूप में कैसे क्यों पहुँचे यह भी देखा गया।

इस अध्ययन से हमें इन ग्रंथों की हमारी विषयवस्तु के लिए उपयोगिता व विश्वसनीयता कितनी है उसका पता चलता है।

अगले भाग में हम अजमेर नरेश पृथ्वीराज चौहान के जन्म से सम्बन्धित तथ्यों की पड़ताल करेंगे। **(क्रमशः)**

पृष्ठ 25 का शेष

पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

सीमाएँ किसी भी जय अथवा पराजय से तोड़ी नहीं जाती थी। मैं चाहा करता था, कि जय में तुम अपने परिश्रम का वर्णन करो और मुझे सुख प्रदान करो, पर तुमने ऐसा नहीं किया। आज मुझे अनुभव होता है कि पराजयों में तुम्हारी मुस्कराहट विजय में तुम्हारा हनुमान की भाँति तेल और सिन्दूर से तुष्ट रहने का भाव वास्तव में आदर्श भाव है। तुम्हारी बनाई हुई वे समस्त मर्यादाएँ हमें एक महान युग की याद दिलाती हैं। इधर उनकी पीढी सुई के दान पर स्वर्ग प्राप्ति के अधिकार की माँग करती है। सुई के दान पर ही वे सभी दूरियों को भाग कर गले लगाना और छाती से चिपकाना पसन्द करते हैं। पराजयों में उनका उतरा हुआ मुँह और विजय में श्रेय को हथियाने का उनका अशिष्ट प्रयत्न एक ऐसे युग का स्मरण कराती है जिसमें मर्यादाओं को तोड़ कर ही सखा भाव के सृजन की कल्पनाएँ की जाती थी।''

(क्रमशः)

गतांक से आगे

यदुवंशी करौली का इतिहास

– राव शिवराजपालसिंह इनायती

राजा जगमन की मृत्यु के बाद राजा छत्र मन जिन्हें कहीं-कहीं पर छत रमणी और छत्रपाल भी कहा जाता है गद्दी पर सन् 1631 में बैठे। राजा छत्र मन शाहजहाँ के प्रमुख मनसबदारी में एक थे, और उसके साथ दक्षिण की कई लड़ाइयों में शिरकत की थी। राजा छत्र मन ने अपना राज्य गोपालदासजी द्वारा स्थापित राजधानी बैकुंठपुर (जो आज बहादुरपुर के नाम से जाना जाता है) से ही चलाया, यद्यपि इनका राज्य तिमनगढ़ से लेकर चम्बल के दक्षिण में सबलगढ़ तक फैला हुआ था। इनकी पुत्री जस कंवर की शादी मारवाड़ के महाराजा जसवंतसिंहजी के साथ हुई थी। जस कंवर की शादी के बारे में दो तरह के उल्लेख मिलते हैं। प्रथम के अनुसार उनकी शादी बैकुंठपुर से हुई थी, वहीं एक जगह पर उल्लेख आता है कि महाराजा जसवंतसिंह जब हिंडौन परगने के परगना अधिकारी थे तब जसकंवर की शादी हिंडौन में हुई थी। मारवाड़ के प्रसिद्ध राजा अजीतसिंह ने इनकी ही कोख से जन्म लिया था। छत्रमन के सबसे बड़े पुत्र पृथ्वीपाल की मृत्यु इनके सामने ही हो गई थी इसलिए इनके बाद दूसरे पुत्र धर्मपाल को उत्तराधिकार मिला जिन्हें राजा धर्मपाल द्वितीय के नाम से जाना जाता है। तीसरे पुत्र भूप पाल को राव की पदवी के साथ इनायती की जागीर मिली। भूप पाल अपनी बहादुरी के लिए प्रसिद्ध थे, तथा एक बार जब छत्रमन दक्षिण की लड़ाई में बुरी तरह दुश्मन सेना से घिर गये थे तब उन्हें अपनी बहादुरी से बचाकर निकाल लाए। यह वही भूप पाल थे जिन्होंने बालक अजीतसिंह को दिल्ली से निकाल सकुशल मारवाड़ तक पहुँचाने में वीरवर दुर्गादास राठौड़ के साथ सक्रिय भागीदारी निभाई थी। बाद में इन्हें मारवाड़ से शेखपुरा की जागीर भी मिली थी जो संवत् 1835 में वंशज राव पदम पाल की मृत्यु तक अधिकार में रही। तत्कालीन आमेर रियासत से भी भूप पाल को सेवा गाँव की जागीर मिली थी, जो गंगापुर सिटी से हिंडौन मार्ग पर स्थित है। राजा छत्रमन के समय में झिरी के मुकुटावतों ने विद्रोह का असफल प्रयास किया था।

राजा छत्रमन की मृत्यु के बाद धर्मपाल राजा बने। यह पहले राजा थे जिनकी गद्दीनशीनी राजा अर्जुन देव द्वारा सन् 1648 में स्थापित करौली नगर के महलों में हुई। इससे पूर्व राजा अर्जुन देव की गद्दीनशीनी मंडरायल के किले में तथा उनके बाद के राजाओं में राजा चंद्रसेन तथा राजा गोपालदास तक का राज्याभिषेक उटगीर के किले में हुआ था। द्वारिकादास, मुकुंद, जगम्मन और छत्रमन का राज्याभिषेक बैकुंठपुर के किले में हुआ। राजा धर्मपाल द्वितीय के शासनकाल में मुकुटावतों ने फिर विद्रोह करने का प्रयास किया जिसे दिल्ली के मुगल शासकों के सहयोग से दबा दिया गया। अपने शसनकाल में राजा धर्मपाल ने उस समय के शहर को कच्चे परकोटे से सुरक्षित करने का प्रयास किया, जिसके एक क्षेत्र को आज भी फूटा कोट के नाम से जाना जाता है। राजा धर्मपाल के सबसे बड़े पुत्र रतन पाल राजा बने। इनके दूसरे पुत्र कीरत पाल को गरेरी हाड़ोती की जागीर राव की पदवी के साथ मिली। एक अन्य पुत्र भोजपाल को रामठरा की जागीर दी गई। ठाकुर भोज पाल के वंशज मुगल बादशाह के यहाँ 500 जात के मनसबदार भी रहे।

राजा धर्मपाल द्वितीय की मृत्यु के बाद रतन पाल गद्दी पर बैठे। इनके शासनकाल में भी झिरी सरमथुरा के मुकुटावतों ने खंडी की रकम जमा नहीं कर फिर से सिर उठाने की कोशिश की, जिसे सफलतापूर्वक दबा दिया गया। एक उल्लेख के अनुसार जयपुर के राजा सवाई जयसिंह ने भी किसी विशिष्ट कारण से बहादुरपुर के किले में 1 माह तक गुप्त प्रवास किया जब तक कि स्थितियाँ उनके पूर्ण रूप से अनुकूल नहीं हो गई। मारवाड़ के राजा अजीतसिंह जब दिल्ली पर आक्रमण की योजना बना रहे थे तब उन्होंने राजा रतनपाल को संदेश भेजकर हिंडोन परगने पर अधिकार

करते हुए साथ देने की अपील की, लेकिन अपनी कमजोर सैन्य शक्ति का आंकलन कर उस पर राजा ने कोई सकारात्मक पहल नहीं की।

राजा रतन पाल की मृत्यु के बाद कुंवर पाल द्वितीय सन् 1688 में सिंहासन पर बैठे। इनके समय में चारों ओर अराजकता शुरू हो गई थी मुगल सल्तनत की शक्ति क्षीण हो रही थी और मराठा शक्ति का उद्भव होने लगा था। राजा रतन पाल ने अपने सलाहकार के रूप में दो सुयोग्य मुस्लिम नियुक्त किए जिन्होंने सबलगढ़ के जादौनों द्वारा किए विद्रोह को कुचल दिया। इनका शासनकाल 36 वर्षो तक चला जो अमूमन शांतिपूर्ण ही गुजरा। इनकी मृत्यु के बाद करौली राजवंश को एक अति सुयोग्य राजा गोपालसिंह के रूप में सन् 1724 में मिले।

(क्रमशः)

आओ मैं बोध कराती हूँ

– दीया चौहान खरोड़िया

आओ मैं बोध कराती हूँ,
भारत की विरांगनाओं की गाथा सुनाती हूँ।
जलती रही जौहर में नारियाँ, फिर भी भेडिये मौन थे।
हमें पढाया अकबर महान, तो फिर महाराणा प्रताप कौन थे!
क्या वो नहीं महान जो बड़ी-बड़ी सेनाओं पर चढ जाता था!
या फिर वो महान जो सपने में, प्रताप को देखकर डर जाता था।
रणभूमि में जिनके हौसले, दुश्मनों पर भारी पड़ते थे।
यह वो भूमि है जहाँ पर नरपिण्ड, घंटों तक लड़ते थे।
रानियों का सौंदर्य सुनकर वो वहशी कई बार यहाँ आए थे।
धन्य थी वे स्त्रियाँ जिनकी अस्थियाँ तक छू नहीं पाए थे।
अपने सिंहों को वे सिंहनियाँ, फौलाद बना देती थी।
जरूरत जब पड़ती, काटकर शीश थाल में सजा देती थी।
पराजय जिनको कभी सपने में भी स्वीकार नहीं थी।
अपने प्राणों का मोह करे, वह पीढी इतनी गद्दार नहीं थी।
वो दुश्मनों को पकड़कर, निचोड़ दिया करते थे।
पर उनकी बेगमों को भी माँ समझकर छोड़ दिया करते थे।
तो सुनो साथियों! ऐसे वहशी दरिंदों का जाप मत करो।
वीर सपूतों को बदनाम करने का पाप अब मत करो।
काल भी ललकारे उसको वो उससे भी लड़ जाता है।
यह क्षत्रिय धर्म कहलाता है।
18-18 वर्ष की आयु में, वीर गति को प्राप्त हुए।
यह क्षत्रिय धर्म कहलाता है।

अपनी बात

एक आश्रम में बहुत से भिक्षु थे। एक व्यक्ति उस आश्रम में आया और उसने पूछा, उस आश्रम के गुरु से कि मुझे भी साधु होना है। उस आश्रम के गुरु ने कहा- तुम्हें साधु 'दीखना' है या साधु 'होना' है? इन दोनों में फर्क है। अगर दीखना है तो बहुत ही आसान बात है- लेकिन यदि होना है तो बहुत कठिन है। दीखना तो बहुत आसान बात है, आधा घड़ी भी नहीं लगेगी तुम साधु हो जाओगे। कपड़े बदल लो, सिर घुटा लो और किसी का आशीर्वाद ले लो, तुम साधु हो गए। अब तक तुम दूसरों के पैर पकड़ते रहे हो, अब दूसरे आदमी तुम्हारे पैर पकड़ने लगेंगे। आधा घड़ी पहले तुम गृहस्थी थे, अब तुम साधु हो गए।

साधु होना अर्थात् साधुता प्राप्त करना अलग बात है। साधुता जीवनभर की गहरी उपलब्धि है। साधुता ऐसी बात नहीं है कि कोई चाहे और उसे प्राप्त हो जाए। साधुता तो विकसित होती है। बहुत आहिस्ता-आहिस्ता मनुष्य के चित्त में परिवर्तन होता रहता है और बढता रहता है। उसे पता भी नहीं चलता कि कब क्या हो गया। कब दुनिया छूट गई और वह दूसरा आदमी हो गया। दूसरों को भले ही पता चल जाता हो पर स्वयं उसे पता ही नहीं चलता है। क्या हमें पता चलता है कि हम किस दिन जवान हो गए? हमको पता चला कि किस दिन हम बूढे हो गए? हमें बिल्कुल पता नहीं चला हमको दूसरों ने ही कहा होगा कि अब तो आप बूढे हो गये। जीवन में जो भी महत्त्वपूर्ण है वह बहुत धीरे-धीरे भीतर विकसित होता है। उसका पता ही नहीं चलता कि कब क्या हुआ।

हम देखते हैं कि सांसारिक जीवन में कोई संकट आया, तकलीफ हुई और व्यक्ति साधु हो गया। किसी की बात से प्रभावित होकर भावाविष्ट हो गया और साधु हो गया। साधुता क्या इतनी आसान बात है? साधुता तो जीवन भर का अर्जन है। अंकुर प्रस्फुटित होता है, धीरे-धीरे पौधा बड़ा होता है तब फूल आते हैं। बहुत धीरे-धीरे जीवनभर के अनुभव और बोध से भीतर साधुता का फूल उत्पन्न होता है। बाहरी वेशभूषा बदलने मात्र से साधुता का फूल उत्पन्न नहीं होता।

हमको संघ का स्वयंसेवक बनना है। संघ का गणवेश है सफेद कमीज और काली हाफपेण्ट या पैण्ट। यह पहनकर हम आ जाएँ तो क्या हम स्वयंसेवक बन गए? स्वयंसेवकत्व जागृत करने के लिए तो संघ की साधना से गुजरना होगा। कुछ दिन शाखा में आ जाएँ, एक-दो शिविर कर लें मात्र इससे ही स्वयंसेवकत्व जागृत नहीं होता। कुछ लोग आते हैं और कहते हैं कि मुझे संघ का स्वयंसेवक बनना है। स्वयंसेवक बनने की इच्छा है या इसका संकल्प है? दोनों में भेद है। स्वयंसेवक बनने की साधना केवल इच्छा से नहीं चलती। उसके लिए संकल्प चाहिए। इच्छा से वांछित गति नहीं बनती। संकल्प चाहिए। संकल्प प्रगाढ हो। संकल्प साधक के लिए अनिवार्य है।

संकल्प के बाद आवश्यकता है सातत्य की। स्वयंसेवकत्व की साधना शुरू करते हैं तो उसका सातत्य होना आवश्यक है। साधना अविछिन्न बनी रहनी आवश्यक है। साधना का जो बीज संघ में हमने बोया है उसकी हम सुरक्षा करें। उसकी तो दिन रात सुरक्षा आवश्यक है। साधना कोई खंडित बात नहीं है कि कभी कर ली, कभी नहीं की। साधना अखंड बात है। सातत्य की एक अन्तर्धारा सदैव बनी रहे। सातत्य के साथ धैर्य युक्त प्रतीक्षा भी आवश्यक है। बच्चे जैसे आम की गुठली बोकर आम के पेड़ और उस पर लगे आम पाने की बेसब्री प्रकट करते हैं, वैसे साधना नहीं बनती। स्वयंसेवकत्व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है और उसे प्राप्त करने में समय लगता है, तब तक धैर्य भी आवश्यक है। अत: संघ साधना में संकल्पपूर्वक सातत्य बनाये रखें यही हमारा पुरुषार्थ है।

●

MEDICAL EMERGENCY
हीरक जयंती
श्री भवानी निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय
स्वागत कक्ष
NIMS
चिकित्सा सहायता केन्द्र
चिकित्सा सहायता केन्द्र
क्षत्रिय

फरवरी सन् 2022
वर्ष : 59, अंक : 02

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2020-22

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान् ....

....

....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह